सबला

वर्ष 9 : अंक 4 जागोरी, नई दिल्ली अक्तूबर-नवम्बर, 1997

जागोरी
JAGORI

संपादक समूह
कमला भसीन
शारदा जैन
सुनीता ठाकुर
वीणा शिवपुरी
जुही जैन

सहयोग
जागोरी समूह

चित्रांकन
मीनाक्षी भारती (मुखपृष्ठ)
बिंदिया थापर
राजेश

प्रकाशन
गीता भारद्वाज, जागोरी

वितरण
प्रतिभा गुप्ता

ग्रामीण बहनों की द्विमासिक पत्रिका शिक्षा विभाग, मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा अनुदानप्रदत्त, सुश्री गीता भारद्वाज (जागोरी, सी-54 साउथ एक्सटेंशन-II, नई दिल्ली-110049) द्वारा प्रकाशित। वितरण कार्यालय, 1, दरियागंज, नई दिल्ली-110002। इन्द्रप्रस्थ प्रेस (सी.बी.टी.), 4, बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली-110002 में मुद्रित।

इस अंक में

हमारी बात 1

लेख

रानी झांसी रेजीमेन्ट को हमारा सलाम —कमला भसीन-रितु मेनन 3

बलात्कार—सबक सिखाने का जरिया बन गया है —मणिमाला 7

भारतीय महिला आन्दोलन (एक इतिहास) —वीणा शिवपुरी 11

जैसा चिन्तन वैसी गति —सुधा अग्रवाल 13

विज्ञापनों में स्त्रियों का दुरुपयोग 14

कविता

बदलता आईना —आभा भैया 18

मैंने सोचा —सुनीता ठाकुर 18

खेल —सुनीता ठाकुर 19

हमारी धरती हमारा आकाश —नीलम 19

कहानी

मंजू: साहस की मिसाल —सुनीता ठाकुर 20

इन औरतों के नाम —जुही 22

गौरा देवी —सुनीता ठाकुर 24

कानून और अधिकार

...और फैसला हो गया —शशि मौर्य 27

स्वास्थ्य

योनि संक्रमण —कल्पना देवास 29

हमारा पन्ना

घर का काम है सब का काम —कमला भसीन 33

कोतवाल की पत्नी 33

हमारी बात

कुछ साल पहले हम एक गांव गए। एक घर से गीतों की आवाज आ रही थी। हम भी उधर ही चल दिए। एक घर के आंगन में औरतें जच्चा (बच्चा होने के गीत) गा रही थीं। गीत कुछ इस तरह थेः 'जियरा हो गया ठंडा, लल्ले का मुंह देखकर... इक तारा जो टूटा गगन में, लल्ला पैदा हुए मधुबन में...हो लल्ला रे, तेरे बिना क्या जीना... होरिल जनाई (लड़का पैदा करा) नेग मांगे, नेग ऐसा देना याद करे दिन रैना...'। सभी गीतों में लड़के के जन्म की खुशी थी।

हमने पूछाः "क्या लड़की होने पर भी यही गीत गाती हो? कुछ सुनाओ।" औरतें एक दूसरे का मुंह ताकने लगीं। एक बड़ी-बूढ़ी बोली, "बहिन जी, यह गांव है। शहरों में लड़की की खुशी भले गा लो, पर गांवों में नहीं गवती लड़की की खुशी।" इतने में एक गीत गूंजाः 'लल्ली हो गई रे सजनवा...सासुल आवें चेरूआ चढ़ावे मांगे नेग... लल्ला होता सब कुछ देती, लल्ली का क्या नेग।'

लड़की होने पर एक गीत और सुनाः "अंगना बिछा दई खटिया, हाय राम हमरे हो गई बिटिया...बिटिया हुई की ससुर जी ने सुनी, हाथ से छूट गई लठिया... टूट गई लठिया, हाय राम हो गई बिटिया।"

यह घटना लगभग दस साल पहले की है, लेकिन क्या आज हालात में कोई बुनियादी बदलाव आया है? आज भी (गांवों में ही नहीं शहरों में भी) गर्भवती औरतों की 'अल्ट्रासाउंड' तकनीक से जांच करा कर गर्भ में लड़की होने का प्रमाण पा गर्भपात करा दिया जाता है।

कौन बदलेगा इन धारणाओं को? हमारे विचार में औरतों को ही इसमें पहल करनी होगी। यह जानते और मानते हुए भी कि बेटियों में मां-बाप के प्रति ज्यादा मोह-ममता होती है, लड़के की लालसा बनी रहती है। थोड़े-बहुत अपवाद जरूर देखने को मिलते हैं जहां लड़की होने पर भी लड़के के बराबर खुशी मनाई जाती है, लेकिन ऐसी मिसालें आटे में नमक के बराबर है।

हमारा बहनों से अनुरोध है कि वे यह संकल्प लें कि लड़की होने पर न वे स्वयं दुखी होंगी, न पड़ोस-मोहल्ले में ऐसी भावना को पनपने देंगी। सिर्फ सरकारी कानूनों से बदलाव नहीं आने वाला है। घर-परिवार और समाज में लड़की को लड़के के बराबर या उससे भी बढ़कर मानना आप और हम पर निर्भर है।

शारदा जैन

मेंहदी की रात

एक हाथ फैला हुआ, दूजे का आगे बढ़ा
मेंहदी का रंग हम सब पर चढ़ा।
घूंघट कहीं खिसका तो बुर्का कहीं गिरा और हम औरतें
समाज की छतरी से तनिक देर के लिए सरकीं।

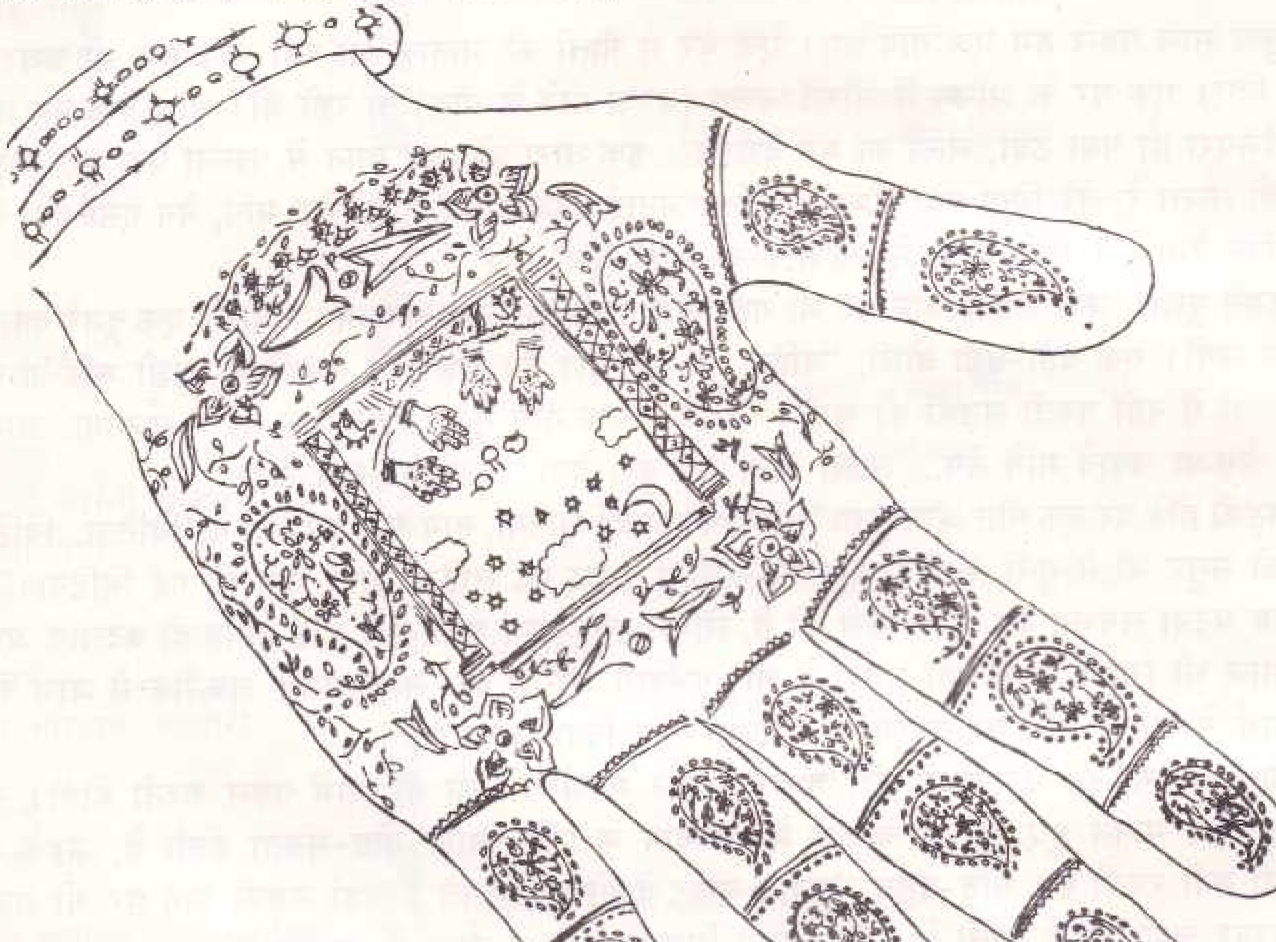

रानी झांसी रेजीमेन्ट को हमारा सलाम

कमला भसीन-रितु मेनन

आज़ादी के पचास साल बाद कैप्टन लक्ष्मी सहगल आज भी उसी लगन से सामाजिक सेवा के काम में लगी हैं। आजादी की 50वीं साल में भारतीय महिला फौज की कैप्टन लक्ष्मी को हम सबका हार्दिक अभिवादन है।

भारत की आज़ादी को पचास बरस हो गए। आज़ादी की पचासवीं वर्षगांठ बड़े जोर शोर से मनाई जा रही है। पूरे साल जलसे, सम्मेलन हुए। दूरदर्शन, रेडियो पर ढेरों प्रोग्राम हुए। अखबारों और पत्रिकाओं में अनगिनित लेख लिखे गए। आज़ादी के पचास सालों पर कई किताबें लिखी गईं। उन लोगों को याद किया गया जिन्होंने आज़ादी की लम्बी लड़ाई में हिस्सा लिया।

हम भी आज कुछ ऐसी महिलाओं को याद कर रहे हैं जिन्होंने आज़ादी के लिए अपनी जान लगा दी। जिन्होंने देश के लिए तन, मन, धन लगाया। हम उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं उनका गुणगान कर रहे हैं और इसके साथ-साथ हम उनसे कुछ सीखने की भी कोशिश कर रहे हैं। उनको याद करने के साथ-साथ हम अपने आप से और आज के जवान लोगों से सवाल कर रहे हैं। वह सवाल है—हम आज अपने समाज और अपने देश को मज़बूत बनाने के लिए क्या कर रहे हैं?

हम आज याद कर रहे हैं रानी झांसी रेजीमेन्ट की रानियों को। 1943 में, यानि आज से 55 साल पहले क़रीब एक हज़ार महिलाएं रानी झांसी रेजीमेन्ट में भर्ती हुईं। उनका मक़सद था भारत की आज़ादी। पता नहीं आप में से कितनों ने औरतों की उस फ़ौज का नाम सुना है। रानी झांसी रेजीमेन्ट सुभाष चन्द्र बोस द्वारा बनाई आज़ाद हिन्द फ़ौज का हिस्सा थी। नेता जी सुभाष चन्द्र बोस का मानना था कि बिना जंग किए अंग्रेज़ों को देश से नहीं निकाला जा सकता। इस जंग या युद्ध के लिए उन्होंने आज़ाद हिन्द फौज बनाई।

यह फ़ौज नेताजी ने देश के बाहर बनाई, क्योंकि देश के अन्दर तो अंग्रेज़ उन्हें बढ़ने नहीं देते। 1943 में सिंगापुर में आज़ाद हिन्द फ़ौज का गठन शुरु हुआ। सिंगापुर, मलेशिया व आस-पास के देशों में बसे हिन्दुस्तानियों को उस फ़ौज में भर्ती किया गया। नेता जी का इरादा था कि तैयार होकर यह फ़ौज अंग्रेज़ों का मुक़ाबला करेगी।

नेताजी का आह्वान

नेताजी ने औरतों की एक अलग रेजीमेन्ट बनाने का फैसला किया और उसका नाम रानी झांसी रेजीमेन्ट रखा। नेताजी का मानना था कि मर्दों के समान औरतें भी आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा ले सकती हैं। जवान औरतें फौजियों जैसे लड़ सकती हैं, हथियार चला सकती हैं। कुछ औरतें दूसरे बन्दोबस्त कर सकती हैं। 1943 में सिंगापुर में नेताजी ने लक्ष्मी स्वामीनाथन नाम की 22-23 बरस की महिला को बुलावा दिया औरतों की रेजीमेन्ट बनाने का। लक्ष्मी सिंगापुर में डाक्टर थी। तीन बरस पहले ही वह मद्रास से सिंगापुर आई थीं वहां डॉक्टर की नौकरी करने। लक्ष्मी के मन में आज़ादी के लिए लड़ने की इच्छा पहले से थी। उनके परिवार में काफ़ी पहले से आजादी के चर्चे होते थे। लक्ष्मी की माता अम्मू स्वामीनाथन उनकी मदद करती थी जो आज़ादी के मनसूबे बना रहे थे। नेताजी का बुलावा पाते ही लक्ष्मी ने सिंगापुर में रहने वाली हिन्दुस्तानी औरतों से बातचीत की, उन्हें आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने को कहा। तीन दिन के अन्दर सिंगापुर में लक्ष्मी ने 5000 औरतें इकट्ठी कर लीं और नेता जी को इन औरतों से बात करने को कहा। ये औरतें अधिकतर तमिल थीं और उन परिवारों से थीं जो काम की तलाश में सिंगापुर, मलेशिया गए थे।

हम औरतें तैयार हैं

नेताजी ने अंग्रेज़ी में भाषण दिया जिसका अनुवाद लक्ष्मी ने किया तमिल में। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि आज़ादी की लड़ाई में हिस्सा लेने से औरतों को भी आज़ादी मिलेगी। वे अपनी आज़ादी के लिए रास्ते बना पायेंगी। औरतें सिर्फ़ मां और पत्नी ही नहीं बन सकतीं। वे चाहें तो सब कुछ कर सकती हैं और समाज में अपने लिए बेहतर जगह बना सकती हैं। साथ ही साथ नेताजी ने

उन्हें यह भी बताया कि फ़ौज का काम जोखिम भरा होगा, ख़तरे मोल लेने होंगे। फिर पूछा "बोलो, तैयार हो भर्ती होने को?"

बड़ी तादाद में औरतें स्टेज की तरफ़ भागीं और कहा वे सब भर्ती होना चाहती हैं। पूरे माहौल में मानो बिजली चमक उठी हो। इतना जोश। कुछ औरतों की गोद में छोटे बच्चे थे—पर वे भी फ़ौज में भर्ती होना चाहती थीं। देश के लिए कुछ करना चाहती थीं।

अगले दिन से रानी झांसी रेजीमेंट की भर्ती चालू हुई। इतनी ज़्यादा औरतें आई भर्ती होने कि उन सब को लेना मुश्किल हो गया। कुछ को कहना पड़ा कि उनकी उम्र ज़्यादा है, उन्हें नहीं लिया जा सकता। दस औरतों के एक समूह को जब कहा गया कि वे बड़ी उम्र की वजह से भर्ती नहीं हो सकतीं तो वे सब अड़ गईं, बोलीं—भर्ती तो वे होंगी। उनमें से एक ने कहा "ये बताओ कि फौज में आप सब खाना तो खाओगे। खाना बनाने के लिए भी तो लोग चाहिये होंगे। हम खाना बना देंगे।" उन्हें भर्ती करना पड़ा और ये सब औरतें रसोई में खाना पकाने जाने से पहले खाकी वर्दी पहनकर रोज़ परेड करती थीं।

पहली महिला फौज

इस तरह गठन हुआ भारत की पहली व आख़िरी औरतों की फ़ौज का लगभग एक हज़ार औरतों की भर्ती हुई रानी झांसी रेजीमेन्ट में। इसके अलावा दो सौ औरतें नर्सों के रूप में भर्ती हुई। इन सबको वही ट्रेनिंग दी गई जो मर्दों को दी जाती थी। उनकी वर्दी भी वही थी। इस फ़ौज ने अचानक औरतों की परिभाषा ही बदल दी। यकायक औरतों के बारे में विचार, मान्यतायें

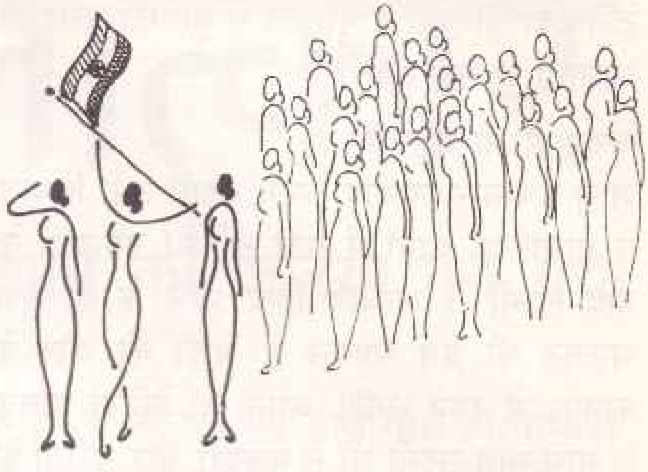

बदलने लगीं। अपनी हिम्मत से औरतों ने बता दिया कि वे किसी तरह भी मर्दों से पीछे नहीं है। आठ औरतों ने अफ़सरों की ट्रेनिंग की और वे अफ़सर बनीं। रानी झांसी रेजीमेन्ट की अगवा थीं लक्ष्मी स्वामीनाथन या कैप्टन लक्ष्मी।

दो ढाई साल तक इन औरतों ने फ़ौज में काम किया। 1945 में कैप्टन लक्ष्मी और उनके कई साथियों को अंग्रेजों ने बन्दी बना लिया। आज़ाद हिन्द फ़ौज भी कुछ अधिक न कर सकी—पर इन सब की हिम्मत और बुलन्द इरादों ने पूरे देश में जोश फैलाया, औरों को हिम्मत दी। कैप्टन लक्ष्मी क़ैद से छूटने के बाद एक साल बर्मा में रहीं। वहां वे घायलों की दवा दारू करतीं, आज़ाद हिन्द फ़ौज के बारे में प्रचार करतीं।

हम सभी रानियों को सलाम करते हैं, उनका अभिनन्दन करते हैं, उनकी हिम्मत, देश-प्रेम और त्याग से प्रेरणा लेते हैं। नेता जी के एक बुलावे पर इतनी सारी बहनें घर बार, बच्चे छोड़कर फ़ौज में भर्ती हो गई, यह हम सब के लिए बहुत ही गौरव की बात है। इन सब औरतों ने इस बात का सुबूत दिया कि अगर उन्हें मौका दिया जाए, उन्हें काबिल समझा जाए, उन्हें बढ़ावा और

ट्रेनिंग दी जाए तो वे मुश्किल से मुश्किल काम भी आसानी से कर सकती हैं।

कैप्टन लक्ष्मी सहगल

आज पचास साल बाद कैप्टन लक्ष्मी उसी हिम्मत से सामाजिक कामों में लगी हुई हैं। आज़ादी के बाद लक्ष्मी ने आज़ाद हिन्द फ़ौज के ही एक अफ़सर श्री प्रेम सहगल से शादी की और वे कानपुर में रहने लगीं। अपनी दो बेटियां पालने के साथ साथ लक्ष्मी जी ने मज़दूरों और ग़रीबों के लिए एक दवाखाना शुरू किया। उन्होंने मज़दूर यूनियनों की मदद करनी शुरू की। उन्हें जहां लगा कि वे समाज के लिए कुछ कर सकती हैं वे कूद पड़ीं उस काम में। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद लक्ष्मी जी ने शरणार्थियों के साथ काम किया। 1971 में बंगलादेश की आज़ादी के लिए उन्होंने काम किया। बंगलादेश के शरणार्थियों की मदद की। 1984 में जब कानपुर में सिक्खों के ख़िलाफ दंगे हुए तब भी लक्ष्मी जी फिर से सद्भाव और शान्ति कायम करने के काम में सबसे आगे थीं। 1943 से आज 1998 तक कैप्टन लक्ष्मी उसी लगन से काम कर रही हैं। वे जनवादी महिला समिति, उत्तर प्रदेश की संचालिका रही हैं, अखिल भारतीय प्रजातांत्रिक महिला संघ के साथ वे बरसों से जुड़ी हैं। आज़ाद हिन्द फ़ौज और रानी झांसी रेजीमेन्ट के साथियों की सहायता के लिए लक्ष्मी जी ने बरसों काम किया। आज भी जब वे लगभग 80 वर्ष की हैं वे इन सब कामों में लगी हैं।

लक्ष्मी जी ने अपनी जीवनी भी लिखी और दुनिया को अपने फ़ौज के तजुर्बे बताये, उन सैकड़ों औरतों के बारे में बताया जो सिर पे कफ़न बांधकर निकल पड़ी थीं। यह लक्ष्मी जी की बदौलत है कि आज लोग रानी झांसी रेजीमेन्ट के बारे में जानते हैं। पुरुष इतिहासकार तो भूल ही जाते हैं औरतों के बारे में लिखना। उनके लिए औरतें इतिहास का हिस्सा नहीं हैं। अपनी जीवनी लिखकर लक्ष्मी जी ने भारत के इतिहास में औरतों के योगदान को उजागर किया है। हिन्दी में लक्ष्मी जी की जीवनी तीस बरस पहले छपी थी। अंग्रेज़ी में उनकी जीवनी अभी दो माह पहले छापी है काली फॉर वुमेन ने। उस जीवनी में उनकी हम दोनों के साथ बातचीत के अंश भी हैं। हमने तीन बार कई घन्टों तक लक्ष्मी जी से उनके जीवन के बारे में बातचीत की थी और फिर उसे लिखा और छपवाया। हमारा मक़सद था नई पीढ़ी को लक्ष्मी जी और उनकी रानी झांसी रेजीमेन्ट की साथियों के बारे में बताना ताकि वे उनसे प्रेरणा ले सकें। □

कुछ करने की ठान लें तो क्या नहीं कर सकती हैं
हमारी हिम्मत के बूते पर बंजर भी खिल सकती है।

बलात्कार

सबक सिखाने का ज़रिया बन गया

मणिमाला

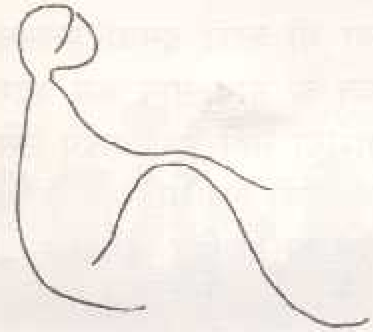

हरियाणा का नूंह जिला औरतों पर होने वाले अत्याचारों का क्रूर उदाहरण बन कर सामने आया है। हैरानी की बात है कि सब जानते हुए भी पुलिस व प्रशासन यहां अनदेखी करते रहे हैं—एक रिपोर्ट

नूंह जिले में हाल में सामूहिक बलात्कार की दो घटनाएं हुईं। दोनों ही घटनाएं सबक सिखाने के इरादे से हुईं। एक इसलिए कि बहू दहेज में मोटर साईकिल लेकर नहीं आई। दूसरी इसलिए कि बेटी ने अपनी मर्जी से शादी कर ली। दोनों ही लड़कियां इन्साफ के लिए लड़ रही हैं, पर अब तक तो इन्साफ काफी दूर है उनसे। नूंह हरियाणा में है।

मोटर साइकिल न मिलने पर बलात्कार

बसगरी पर उसके पति की मौजूदगी में बलात्कार हुआ। सिर्फ पति की मौजूदगी में नहीं, बल्कि उसकी मदद से हुआ। चार बलात्कारियों में एक उसका पति स्वयं था। दूसरा ननदोई। साथ में दो और लोग। यह सब बसगरी के साथ शादी की रात को हुआ। हां, उसी रात को, जब वह नया घर, नई गृहस्थी सजाने-बसाने के सपने देख रही थी। यह सब इसलिए हुआ कि दहेज में मोटर साईकिल नहीं मिली थी।

कुछ लोगों ने बीच-बचाव की कोशिश की थी। बरकती उसमें एक थी। बलात्कारियों ने उसके बच्चे को भी उठाकर फेंक दिया था।

मामला पंचायत में पहुंचा, पर फैसला नहीं हुआ

बलात्कार का यह मामला पंचायत में पहुंचा, पर लटक गया। लड़के वालों की ताकत के सामने पंचायत की कुछ नहीं चलती और पंचायत के सामने पुलिस की नहीं चलती। लड़के वाले सामाजिक तौर पर भी मजबूत हैं, और राजनीतिक तौर पर भी। लड़की का गोत्र मंगारिया है। लड़के का दहगल। इस क्षेत्र में दहगल गोत्र वालों की संख्या ज्यादा है। उनके 360 गांव हैं। मंगारिया गोत्र का सिर्फ एक गांव।

जब कभी पंचायत बैठती है तो लड़की वालों की ओर से एक जन होता है। लड़के वालों की ओर से 50 आदमी होते हैं। नतीजा यह होता है कि बलात्कारियों के पक्ष में ज्यादा लोग बोलते हैं। ज्यादा जोर से बोलते हैं। ज्यादा देर तक बोलते हैं। पंचायत इनके साथ हो लेती है। जो भी सच

कहने की हिम्मत करता है, उसे मारपीट कर चुप करा दिया जाता है। बरकती, जिसके बच्चे को उठाकर फेंक दिया गया था, उसने सच बयान करने की कोशिश की थी। उसे सरपंच के सामने ही मारा-पीटा गया। सब कुछ देख सुनकर भी लोग चुप बैठे रहे। पंचायत भी चुप रही।

पुलिस भी चुप है

यह इलाका फिरोजपुर नमक पंचायत में पड़ता है। वहां के उपसरपंच ने बताया कि पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करवाई गई है, पर पुलिस कुछ नहीं कर रही।

नूंह थाने के थाना प्रभारी भगतराम का कहना है कि वे पंचायत से डरते हैं। यहां का रिवाज है कि अगर पुलिस किसी को गिरफ्तार करती है तो पंचायत हमें ही छह माह के लिए बन्दी बना लेगी। इतनी डरी हुई पुलिस भला क्या कर सकती है।

घटना की खबर मिलने पर दिल्ली की कुछ महिला संस्थाओं की कार्यकर्ता नूंह गईं। लड़की से, पंचो-सरपंचों से और पुलिस से मिलीं। काफी भाग-दौड़ करने पर बलात्कारियों को गिरफ्तार किया गया, लेकिन सक्रिय सहयोग करने वाले सास-ससुर, नन्द व अन्य रिश्तेदार अभी तक गिरफ्तार नहीं हो सके हैं।

बरकती ससुराल नहीं जायेगी

लड़की ने कह रखा है कि वह ससुराल नहीं जायेगी। किसी भी हालत में नहीं जायेगी। जायेगी भी क्यों? जहां उस पर बलात्कार हुआ हो, वहां उसे क्यों जाना चाहिए? वह कहती है कि अगर पंचायत ने इंसाफ नहीं किया तो वह आत्महत्या कर लेगी। आत्महत्या भी क्यों? इसका मतलब यह हुआ कि पंचायत के साथ-साथ हम और आप पर भी उसे भरोसा नहीं है। आइये उसे भरोसा दिलाएं। क्या लड़की के लिए सिर्फ दो ही रास्ते बचे हैं– ससुराल का या फिर आत्यमहत्या का...? नहीं। रास्ते और भी हैं।

अपनी मर्जी से शादी: सजा बलात्कार

नूंह जिले के ही सुढाका गांव में बलात्कार की एक और घटना घटी। यहां तो बलात्कार करने वालों में स्वयं सरपंच भी शामिल रहा। वजह सिर्फ़ इतनी थी कि लड़की ने अपनी पसन्द से शादी कर ली थी। गांव को यह गवारा नहीं था।

लड़की बेचने का रिवाज़ है

इस गांव में विकास का कोई असर नहीं दिखता। जमाने के रफ्तार से भी इस गांव का कोई लेना देना नहीं है। यहां अभी भी बेटियों को बेचने का रिवाज बदस्तूर जारी है। मैमुन का सौदा भी तय हो चुका था। उसके माता-पिता को उसके बदले में 15000 रुपये मिलने वाले थे।

ऐसा भी कह सकते हैं कि यहां लड़की के माता-पिता दहेज लेते हैं। जिस तरह देश के ज्यादातर हिस्सों में लड़के और लड़के वाले दहेज लेते हैं। जब मैमुन ने अपनी पसन्द से शादी कर ली तो उन्हें ये रुपये नहीं मिले। इस घाटे को वे बर्दाश्त न कर सके।

मैमुन और इदरिस दोनों ही मुसलमान हैं, लेकिन इनकी जाति अलग-अलग है—गांव वालों की नाराजगी का एक कारण यह भी है। सरपंच के नेतृत्व में गांव वालों ने उन पर हमला किया और मैमुन पर बलात्कार किया। किसी तरह से बचते-बचते वे लोग राष्ट्रीय महिला आयोग के दरवाजे तक पहुंचे।

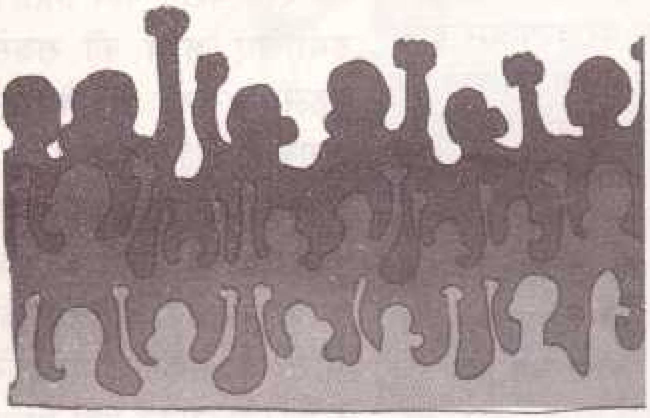

राष्ट्रीय महिला आयोग तक

आयोग की अध्यक्ष मोहिनी गिरी, पद्मा सेठ और सईदा हमीद मैमुन तथा इदरीस को साथ लेकर उनके गांव पहुंचे। जैसे ही गाड़ी इदरिस के घर के बाहर रुकी, गांव वालों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। मैमुन को गाड़ी से खींच कर ले गए। गांव की जोर-जबरदस्ती के सामने महिला आयोग भी बेबस हो गया। आयोग के सदस्य इदरिस को लेकर लौट आए। गृह मंत्री के हस्तक्षेप के बाद अब मैमुन नारी निकेतन में है।

सोचना यह है कि

अत्याचार-व्यभिचार के सामने महिला आयोग जैसी संस्थाएं भी अपने आपको बेबस महसूस करने लगे या पुलिस अत्याचारियों से डरने लगे तो क्या किया जाए? कैसे किया जाए? इन्सान किसकी मदद मांगे? किस पर भरोसा करे? आखिर ऐसी स्थिति क्यों आ गयी कि महिला आयोग को वापस आ जाना पड़ा।

ऐसी स्थिति में औरतें अपने-आप रास्ता कैसे तलाशें? तथा सामाजिक संस्थाएं कैसे मदद करें? ये सवाल हमारे सामने हैं।

नूंह में बलात्कार की दो-दो घटनाएं हुई पर बोलने वाला कोई नहीं मिला, लड़ने वाला कोई नहीं मिला। लोग-बाग दुखी तो हुए पर अन्याय के खिलाफ खड़े नहीं हुए। ऐसा तो हो नहीं सकता कि किसी गांव में बलात्कार की घटना हो, पर किसी को बुरा न लगे, किसी का मन न तड़पे। कई लोग होंगे जो इसके खिलाफ बोलना चाहते होंगे, लड़ना चाहते होंगे, पर वे कर नहीं पाए ऐसा। कारण?

सामाजिक संस्थाओं का अभाव

शायद यह कि वहां ऐसा कोई महिला संगठन नहीं है जो इन सवालों को उठाये। अन्याय के खिलाफ आवाज बुलन्द करे। स्थानीय सहयोग न मिलने की वजह से राष्ट्रीय महिला आयोग के प्रतिनिधि भी कुछ कर न सके। यहां तक की उनकी कार को भी बदमाशों ने घेर रखा था। सच्चाई तो यह है कि जब तक स्थानीय तौर पर औरतें खड़ी नहीं हो पायेंगी तब तक सिर्फ बाहरी सहारे कुछ नहीं कर सकते।

दूरदराज तक इस इलाके में कोई महिला संगठन नहीं है। नतीजा यह हुआ कि कोई बातचीत करने वाले भी नहीं है। जब कभी ऐसी कोई घटना घटती है तब पीड़ित औरत और ज्यादा डर जाती है। अपराधी और अधिक डराने लग जाते हैं और बाकी लोग चुप हो जाते हैं। उनके

मुंह में ताला लग जाता है। कोई तो हो जो पीड़ित औरत का डर कम करने में मदद करे। लोगों की चुप्पी तोड़े। कौन कर सकता है ये काम?

यह काम तो किसी न किसी संस्था को ही करना होगा। अच्छी बात हुई है कि छोटे छोटे कस्बों के स्तर पर भी गैर सरकारी महिला संस्थाएं सक्रिय होने लगी हैं। कई कई जगहों पर तो एक साथ कई महिला संस्थाएं सक्रिय हैं। ऐसा नहीं कि जहां कई महिला संस्थाएं सक्रिय हैं वहां महिलाओं पर अत्याचार होते ही नहीं, पर इतना जरूर है कि कम होते हैं। अगर होते भी हैं तो अनदेखे नहीं रह जाते। उन पर प्रतिक्रिया होती है, विरोध होता है। सामान्य जन भी अपराधियों के खिलाफ बोलने की हिम्मत जुटाते हैं। इससे पीड़ित औरत की पीड़ा कम हो न हो, डर तो जरूर कम होता है। उसका अपना डर जितना कम होता है उसी हिसाब से अपराधियों का डर बढ़ता है। ऐसा नहीं कि इस बात से सामाजिक काम करने वाली औरतें या संस्थाएं वाकिफ़ नहीं हैं। हम सबको इस बात का गहरा अहसास है कि अगर नूंह में भी कोई महिला संस्था होती तो वहां भी इन घटनाओं के खिलाफ़ आवाज़ उठती। उसी तरह जैसे सहारनपुर में उठी। इतनी तेज आवाज उठी, इतना तगड़ा संघर्ष हुआ कि पुलिस भी इस आवाज़ को दबा न सकी। अगर ज़ुल्म हुआ तो प्रतिकार भी हुआ। ज़ुल्मियों को जेल भी हुई।

ऐसा नहीं कि जहां कई महिला संस्थाएं सक्रिय हैं वहां महिलाओं पर अत्याचार होते ही नहीं, पर इतना जरूर है कि कम होते हैं। अगर होते भी हैं तो अनदेखे नहीं रह जाते। उन पर प्रतिक्रिया होती है, विरोध होता है। सामान्य जन भी अपराधियों के खिलाफ बोलने की हिम्मत जुटाते हैं। इससे पीड़ित औरत की पीड़ा कम हो न हो, डर तो जरूर कम होता है। उसका अपना डर जितना कम होता है उसी हिसाब से अपराधियों का डर बढ़ता है।

नूंह में हुई बलात्कार की घटनाओं का कोई सशक्त विरोध नहीं हो पाया। अगर वहां कोई महिला संस्था काम कर रही होती तो ऐसा कतई नहीं होता। इसीलिए आज की सबसे पहली जरूरत है कि इस इलाके में कोई न कोई महिला संगठन काम शुरू करे। यह काम वहां की औरतें भी शुरू कर सकती हैं। आसपास की औरतें कर सकती हैं या दूसरे इलाकों से जाकर वहां संस्था बना सकती हैं। चाहे जैसे भी हो यह काम करना होगा। अगर हम चाहते हैं कि इस इलाके में ज़ुल्म का यह इतिहास दोहराया न जाए तो हमें अपना इतिहास बनाना होगा। राष्ट्रीय महिला आयोग या बाहर से थोड़े समय के लिए आए कोई कार्यकर्ता बहुत कुछ नहीं कर सकते, सिवाय 'ज़ुल्म-ज़ुल्म हुआ...' यह रोना रोने के। रोने से 'तकदीरें' नहीं बदला करतीं। इसके लिए तो खुद को बदलना पड़ता है और इसके लिए चाहिए एक सशक्त संगठन जो खुद का भी सहारा बने और दूसरों को भी सहारा दे। □

बेटी को भी प्यार दो
शिक्षा और अधिकार दो।

भारतीय महिला आन्दोलन
(एक इतिहास)

वीणा शिवपुरी

आज भारतीय महिला आन्दोलन अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी दुनियां भर की औरतों का हाथ थामे हुए है। कुछ समस्याएं सिर्फ़ हमारी अपनी हैं तो कुछ साझी, परन्तु औरत होने के नाते भोगी गई असमानता और अन्याय का अहसास हम सबको एक सूत्र में बांधता है।

आमतौर पर लोग महिला आन्दोलन पर पश्चिम की नकल का आरोप लगाते हैं। ये वही लोग होते हैं जो या तो इसके विषय में जानते नहीं हैं या सच्चाई को नकारने में उनका निहित स्वार्थ है। भारत में संगठित रूप से आन्दोलन का स्वरूप कुछ दशक पुराना ही है, परन्तु इसकी जड़ें दूर तक जाती हैं। महिला जागृति की शुरुआत उन्नीसवीं शताब्दी के सुधारवादी आन्दोलन तथा आज़ादी की लड़ाई से ही हो गई थी। स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़ी औरतों में जितनी हिम्मत, आजादी और गतिशीलता नज़र आती थी वह शायद आज भी सभी औरतों को हासिल नहीं है, लेकिन दुर्भाग्य से आज़ादी मिलने पर कुछ मुट्ठी भर औरतें ही राजनीति में आईं। बाकी सभी अपने-अपने घरों को लौट गईं। उस दौरान पैदा हुई जागरूकता किसी मज़बूत आन्दोलन में नहीं बदल सकी। फिर भी इस अनुभव का बीज पड़ चुका था। औरतों ने साबित कर दिया कि मौका मिलने पर वह किसी क्षेत्र में पीछे नहीं रहती हैं।

कुछ अन्य संघर्ष

ध्यान देने की बात है कि औरतें सिर्फ़ स्वतंत्रता आन्दोलन से ही नहीं जुड़ीं, बल्कि उन्होंने वर्ग संघर्ष में भी हिस्सा लिया। बंगाल में तेभागा आन्दोलन में जमींदार वर्ग के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी। साम्यवादी पार्टी के झण्डे तले सभाओं और प्रदर्शनों में हिस्सा लिया। कृषि औजारों के साथ "नारी वाहिनी" बनाकर रातों को गांव की सुरक्षा का काम तक किया। अहिंसक आन्दोलनों में पुलिस की लाठियां खाईं तो कहीं कहीं लाल मिर्च के सहारे पुलिस के हथियार भी छीने। यानि औरतें

भारत के हर कोने में चल रहे संघर्षों का अहम् हिस्सा रही हैं।

आजादी के बाद भी चाहे चाय बागान मज़दूरों का संघर्ष हो या 60 के दशक में नक्सलबाड़ी आन्दोलन, महाराष्ट्र का मंहगाई विरोधी आन्दोलन रहा हो या 1974 की मशहूर रेल हड़ताल, औरतें अगली पंक्ति में रही हैं। इन सबको महिला आन्दोलन का नाम नहीं दिया जा सकता, लेकिन ये सभी नारी चेतना के क़दम थे। इन सबके जरिए उनका राजनीतिक सोच परिपक्व हुआ।

एक नई हलचल

सातवें दशक में राजनैतिक चेतना के चलते महिला नेता उभरने लगीं। महिलाओं से जुड़े मुद्दों पर चर्चाएं होने लगीं। कुछ लोगों ने जुड़ कर संगठित होने की कोशिश भी की। सन् 1975 में स्त्री मुक्ति संगठन (बम्बई) ने कामकाजी महिलाओं पर गोष्ठी बुलाई। 1978 में सोशलिस्ट विमैन्स ग्रुप ने कार्य शिविर आयोजित किया। 1978 के जुलाई महीने में "फैमिनिस्ट नैटवर्क" नामक पत्र का पहला अंक निकला।

उसी दौरान "मानुषी" का प्रकाशन शुरू हुआ। 1980 तक कई संगठनों का सोच काफ़ी हद तक विकसित हो चुका था। औरतों के खिलाफ़ हो रहे हिंसक अपराधों के विरूद्ध एकजुट आवाज़ें उठने लगी थीं।

कुछ घटनाएं

इस संदर्भ में चन्द्रपुर, महाराष्ट्र में पुलिस थाने में चौदह वर्षीय लड़की मथुरा के साथ पुलिस कर्मियों द्वारा किया गया बलात्कार एक मील का पत्थर घटना साबित हुई। नागपुर की निचली अदालत

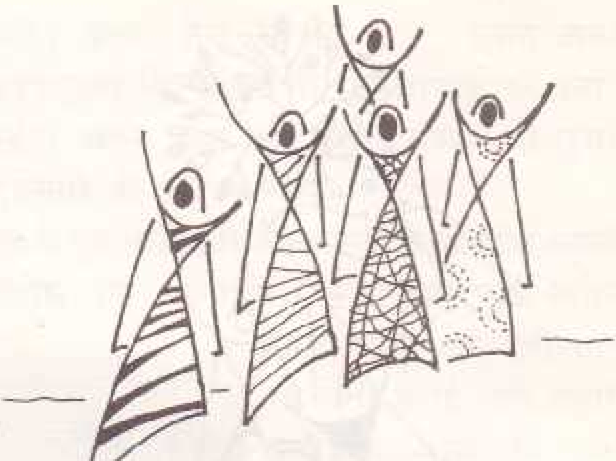

में लड़की को चरित्रहीन बताकर फ़ैसला पुलिस के हक़ में हुआ। महाराष्ट्र के उच्च न्यायालय ने फ़ैसला बदलकर सिपाहियों को साढ़े सात साल की सजा दी। देश के सर्वोच्च न्यायालय ने फिर फ़ैसला बदल दिया और यौन संबंध में मथुरा की रज़ामंदी बताई।

इन तीन अदालतों के फैसलों ने शिक्षित मध्यवर्ग की संवेदनाओं को झकझोर दिया। सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले के ख़िलाफ़ व्यापक विरोध हुआ। प्रदर्शन, बैठकें, चर्चाएं, हस्ताक्षर एकत्र किए गए।

इसी दौर में हैदराबाद की रमीज़ा बी, पंजाब की लक्ष्मी और बागपत की माया त्यागी के मामले भी रोशनी में आए। औरतों के अधिकारों का सवाल उठा। बम्बई में "फ़ोरम अगेंस्ट रेप" तथा दिल्ली में "स्त्री संघर्ष" गठित हुए। दहेज हत्याएं, पत्नियों के साथ मारपीट, शराबखोरी, यौन अत्याचार जैसे मुद्दों पर बहसें होने लगीं। अब तक जिन विषयों को दबाया छुपाया जाता था उन्हें खुले आम लाया गया। नुक्कड़ नाटकों गीतों, पोस्टरों, प्रदर्शनियों, समाचार पत्रों का सहारा लिया गया। हिन्दी, अंग्रेजी, कन्नड़, मराठी, गुजराती आदि भाषाओं में नारीवादी पत्रिकाएं निकलने लगीं।

सशक्त आन्दोलन

अब यह महसूस किया गया कि समस्याग्रस्त औरतों को कानूनी मदद देने के लिए संगठनों की जरूरत है। घर में प्रताड़ित औरतों के लिए आश्रय घरों की जरूरत है। चिकित्सा सहायता और भावनात्मक सहयोग देने वाले लोगों की जरूरत है। साथ ही ऐसे दबाव समूहों की ज़रूरत है जो सरकार पर दबाव डालकर कानूनों में संशोधन कराएं। इस प्रकार अनेक स्वायत्त ग़ैर सरकारी महिला संस्थाएं पैदा हुईं। अपने-अपने क्षेत्र में काम करते हुए इनका आपसी तालमेल पैदा हुआ। समय के साथ-साथ, नए-नए मुद्दे सामने आए और उन पर काम करने वाले लोग सामने आए। आज भारत में एक सशक्त महिला आन्दोलन सक्रिय है। जिसमें दूर दराज की निरक्षर औरतों से लेकर महानगर की शिक्षित आधुनिक औरतें भी शामिल हैं। सभी अपनी अपनी योग्यता के अनुसार योगदान दे रही हैं। इस आन्दोलन को मजबूत बना रही हैं। अब सवाल सिर्फ़ औरतों के मुद्दों तक सीमित नहीं है। अब सवाल मानवीय सरोकारों का है। उन पर औरतों के सोच की अहमियत का है। 50 प्रतिशत आबादी के हकों का है।

आज भारतीय महिला आन्दोलन अपनी जड़ों से जुड़े रहकर भी दुनियां भर की औरतों का हाथ थामे हुए है। कुछ समस्याएं सिर्फ़ हमारी अपनी हैं तो कुछ साझी परन्तु औरत होने के नाते भोगी गई असमानता और अन्याय का अहसास हम सबको एक सूत्र में बांधता है। □

जैसा चिन्तन वैसी गति

सुधा अग्रवाल

नदी के किनारे एक नाचनेवाली का महल था। दूसरे किनारे पर एक साधू बाबा कुटिया बनाकर रहते थे। नाचने वाली के पास दिन रात लोग आते हैं। महात्मा जब रोज उन्हें आते-जाते देखता तो सोचता-रे! यह कैसी चाण्डालिनी है, कितनी खराब है? कैसे निकृष्ट कर्म करती है?...महात्मा रात-दिन उसी के बारे में सोचता रहता।

वह नर्तकी जब प्रातःकाल उठती और महात्मा की कुटिया देखती तो कहती– 'अहा! कैसा पवित्र जीवन है। इस महात्मा ने यहां एकान्त में भजन करते हुए जीवन सफल बना लिया है, लेकिन प्रभु! आपने मुझे कहां गिरा दिया। क्या कभी मैं इस महात्मा जैसे बन सकूंगी। कभी आपका भजन कर सकूंगी? यह वह दिन-रात सोचती।

मरने पर दोनों यमराज के पास जाते हैं। महात्मा अब भी वही चिन्तन कर रहा है। उसे कोस रहा है, गालियां दे रहा है। यमदूतों ने पकड़ा और नर्क में डाल दिया।

उधर यमदूतों ने देखा कि नर्तकी आज भी महात्मा जैसा बनने की प्रार्थना कर रही है। उसी के जीवन से प्रभावित हो रही है। उसी जीवन को धन्य मान रही है तो यम के दूत उसे शिवलोक पहुंचा दते हैं। □

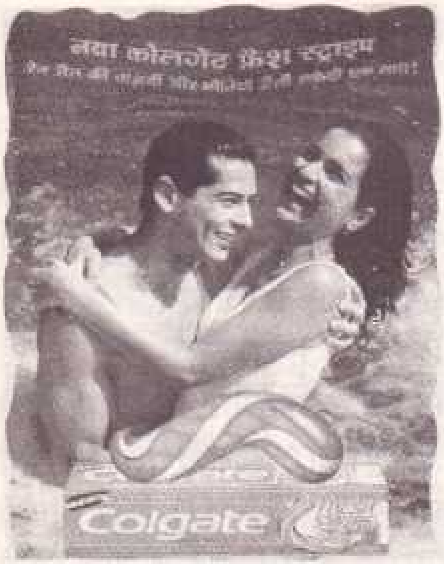

आधुनिक विज्ञापन यह प्रदर्शित करते हैं कि औरतें रात दिन अपने शरीर और चेहरे की सुन्दरता बढ़ाने के बारे में सोचती रहती हैं। ये विज्ञापन 'नारीत्व' के गुणों को रमणीयता, शर्मीलापन और साज-सिंगार के रूप में ही परिभाषित करते हैं। क्या 'मोहक' होना ही असली औरत होना है?

विज्ञापनों में स्त्रियों का दुरुपयोग

उद्योग और विज्ञापन एजेन्सियां कामुक विज्ञापनों का प्रयोग बड़े आम तरीके से करती हैं और स्त्रियों की कीमत पर भारी मुनाफ़ा कमाती हैं। कामुक विज्ञापन वह है जो आधी मनुष्य जाति को घटिया रूप में दर्शाता है। यह भेदभावपूर्ण है, यह एक लिंग की तुलना में दूसरे को नीचा गिराता है, शर्मिन्दा करता है। इस प्रकार के विज्ञापन पश्चिमी पुरुष संस्कृति को जारी रखने का बड़ा अच्छा साधन बन गये हैं तथा एक स्त्री के यौनाकर्षण और शारीरिकता का शोषण करते हैं। 'पुरुष स्त्रियों को मुख्य रूप से कामपूर्ति का साधन समझते हैं। पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की अधिक सजावटी भूमिका से यह बात स्पष्ट हो जाती है। स्त्री पुरुष मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेते हुए दिखाए जाते हैं न कि मिलकर काम करते हुए। स्त्रियों को कामकाजी भूमिका में बहुत कम दर्शाया जाता है, इस सबसे स्त्री के सजावटी रूप को बढ़ावा मिलता है।'

स्त्रियों के अधिकांश चित्र इस प्रकार खींचे जाते हैं कि वे 'सजावटी गुड़िया' या मात्र पुतली सी दिखाई देती हैं जबकि पुरुष गंभीर विचार मुद्रा में दिखाए जाते हैं मानो कोई बौद्धिक प्रक्रिया में मशगूल हों। स्थानीय जनसम्पर्क माध्यम भी इससे कुछ भिन्न नहीं हैं। हमारे विज्ञापनों में स्त्रियां लगातार बनावटी, लुभानेवाली, कामवापसना का साधन, बुद्धिहीन तथा हर समय प्रशंसा चाहने वाली तथा घर व रसोईघर के लायक ही दिखाई जाती हैं। ऐसे अनेक विज्ञापन हैं जहां अधनंगी स्त्रियां मोटर साइकिल, कार, रेडियो का विज्ञापन करती दिखाई जाती हैं। ऐसे उत्पादन जिनका विज्ञापन में दिखाए गए नारी शरीर से कोई सम्बन्ध ही नहीं है।

एक वस्तु के रूप में नारी शरीर का यह व्यापारीकरण (जहां वह पुरुष की लोलुप दृष्टि द्वारा उपभोग किए जाने का समान भर है) कहीं भी इतने अधिक स्पष्ट रूप में नहीं देखा जा सकता जितना कि जिस्म दिखाती, अपनी ओर बुलाती दृष्टि वाली, अर्धनग्न औरतों की तस्वीरों के साथ सिगरेट, ट्रैक्टर, रंग और मशीनों के विज्ञापनों के कैलण्डरों में। ज्यों ही वर्ष का अन्त नज़दीक आता है अनेक बड़ी कम्पनियां अपने बंधे ग्राहकों को देने के लिए इस प्रकार के कैलेण्डर तैयार करवाती हैं। आजकल तो कैलेण्डर बनाने वाले कभी-कभी कुछ ख़ास पेशकश भी करते हैं जैसेकि हर पृष्ठ पर एक दिल लुभाने वाली औरत और उसके साथ ही विज्ञापित वस्तु मंगवाने का आर्डर फॉर्म भी।

स्थानीय परिस्थितयों में स्थानीय स्त्रियों को प्रदर्शित करने के पीछे एक छिपी भावना काम करती है जिसके अनुसार स्थानीय औरतें कामपूर्ति का साधन है। इस प्रकार से स्थानीय पुरुषों की नज़र और दिमाग में विचार घर कर जाता है कि स्थानीय औरतें उन्हें यौन सुख व सन्तोष देने वाली है परिणाम यह है कि औरतों पर होने वाली यौन हिंसा की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। रूप अनेक हैं– सड़क छाप छींटाकशी से लेकर बलात्कार जैसी अनहोनी तक।

स्त्रियों का इस प्रकार का चित्रण मानवीयता के विरुद्ध और शर्मनाक है। क्या यह स्त्री शरीर का सौदा करने का ज़रा परिष्कृत रूप नहीं है? स्त्रियों का इतना घटिया चित्रण औरतों को मात्र खेल का सामान समझने के पुरुष रवैये को मज़बूत करता है।

स्त्रियों का इस्तेमाल करने वाले विज्ञापन प्रायः दो श्रेणियों में आते हैं। एक-वे जो उनका इस्तेमाल यौनवस्तु के रूप में करते हैं तथा दूसरे जो उनकी जगह घर और रसोईघर में मानकर रूढ़िवादी चित्र प्रस्तुत करते हैं।

जबकि विज्ञापनों में पुरुष सफल पेशेवर, महत्वपूर्ण निर्णयकर्ता के रूप में चित्रित किए जाते हैं स्त्रियां गृहणी के रूप में दिखाई जाती हैं जो चावल कुकर, कपड़े धोने या सीने की मशीनें, फर्श चकमाकने के पॉलिश तथा घरेलू कीड़ेमार दवाइयों के साथ व्यस्त और प्रसन्न दिखती हैं। पुरुष शायद ही कभी घर के काम में हाथ बटाते दिखते हैं जबकि औरतें सबसे नये घरेलू साधनों के साथ गर्व और खुशी से फूली नहीं समातीं दिखाई जाती हैं मानो कह रही हों कि घर गृहस्थी ही स्त्री की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी है।

इस प्रकार के विज्ञापन इस सत्य को पूरी तौर पर नकार देते हैं कि आज औरतें कहीं अधिक संख्या में अपने घरों से बाहर निकलकर विभिन्न कामकाज और गतिविधियों में भाग ले रही हैं। पुरुषों को भी घरेलू काम में बराबर का हाथ बंटाना चाहिए– इस भावना के प्रति लोगों में स्वीकृति बढ़ रही है परन्तु विज्ञापनों में इसका सर्वथा अभाव है।

विज्ञापनों में अपने विकृत चित्रण के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना महिलाओं का अधिकार ही नहीं उनकी नैतिक ज़िम्मेदारी भी है। तभी महिलाओं पर होने वाली हिंसा और अन्याय का रुख भी बदला जा सकता है।

बालक मन पर असर

इस प्रकार के विज्ञापनों के असर से बच्चे भी बचे हुए नहीं हैं। लड़के सदा अपने कपड़े मैले करते रहते हैं (चिन्ता की कोई बात नहीं मां उन्हें धोकर फिर से झकाझक कर देगी।) बाहर कैम्प लगाकर रहते हैं, खेलकूद या दौड़भाग की गतिविधियों में लगे रहते हैं। लड़कियां सदा पियानो बजाती, नाचती या गुड़ियों को सजाती अथवा 'मसाक मसाक' (घर-घर) खेलती हैं। वे नाजुक हैं, स्त्री सुलभ हैं। बच्चों के इन क्रियाकलापों का बड़ा दूरगामी प्रभाव पड़ता है। जो वयस्क होने पर उनके व्यवहार में प्रतिफलित होता है। इस प्रकार से लड़के पिता के साथ अपनी पहचान बनाते हैं जिसने उनके लिए सब कुछ किया है, जो ताकतवर, भरोसेमंद और चतुर है। लड़कियां मां के साथ अपनी पहचान बनाती हैं और अपने आपको उसी रूप में ढालती हैं, प्रेममयी, त्यागशील तथा घर परिवार के लिए पूर्णरूप से समर्पित दासी।

सीमित चित्रण

इसके अतिरिक्त अधिकांश विज्ञापनों में स्त्रियों का चित्रण कम अक्ल, मूर्खा के रूप में होता है जो समाज में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका के सन्दर्भ में सरासर अन्याय है। आज लगभग 1.2 करोड़ मलेशियाई औरतें उद्योग-धन्धों, कृषि पेशेवर व शैक्षणिक क्षेत्रों में काम कर रही हैं। इसके साथ ही वे गृहणी, खाना पकाने वाली, माता तथा पारिवारिक आय का प्रबन्ध और अधिकांश खरीददारी करने वाली, आर्थिक उपभोक्ता आदि बहुमुखी भूमिकाएं-निभाती हैं। इतनी विषम ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह पूरा कर पाने के लिए ये विज्ञापन हमें जैसा विश्वास दिलाना चाहते हैं स्त्रियां उससे निश्चय ही कहीं अधिक बुद्धिमती, भरोसेमंद और उपाय कुशल हैं। आधुनिक विज्ञापन यह भी प्रदर्शित करते हैं कि औरतें रात दिन अपने शरीर और चेहरे की सुन्दरता बढ़ाने के बारे में सोचती रहती हैं। ये विज्ञापन 'नारीत्व' के गुणों को रमणीयता, शर्मीलापन और साज-सिंगार के रूप में ही परिभाषित करते हैं। 'मोहक' होना ही असली औरत होना है।

अधिकांश आम औरतों पर इन प्रदर्शित छवियों का क्या प्रभाव पड़ता है? साधारण शक्ल सूरत की स्त्रियों में यह अनिवार्य रूप से एक गहरी हीन भावना, अपराध बोध और अधूरेपन का अहसास पैदा कर देती है। अतः हम अपनी बदसूरती को छिपाकर पर्दे या चमकीले मुखपृष्ठों की नायिकाओं सी दिखने की कोशिश करती हैं

तथा हममें से कुछ तो इसके लिए बेइन्तिहा धन भी खर्च करती हैं

एक सर्वेक्षण के अनुसार

काफ़ी कम वेतन पाने वाली कारखाने में लगी लड़कियां अपने स्वास्थ्य की कीमत पर, पौष्टिक भोजन पर बचत करके अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा कपड़ों, जूतों और श्रृंगार के सामान पर खर्च कर देती हैं। इस प्रकार के झूठे वायदों में फंसाकर स्त्रियों को मूर्ख बनाया जाता है। उन्हें यह महसूस कराया जाता है कि इस प्रकार की सजावट और प्रसन्नता के सौदागर उनके असम्भव स्वप्नों को भी सच बनाने की शक्ति रखते हैं। इस मृगतृष्णा सी सुन्दरता को पाने के लिए हम चालढाल व लुभावनेपन के क्षेत्र में न केवल एक दूसरे से होड़ करती है बल्कि अपने वास्तविक महत्व और स्वयं अपने आप में विश्वास खो बैठती हैं।

औरतों की स्वछवि और उनके नारीत्व को ललचा कर किस प्रकार से वासनात्मक बाज़ार सजाया जाता है यह एक विक्रय कर्मचारी के शब्दों में सबसे अच्छी तरह प्रकट होता है: 'यदि आप चालबाज़ी शब्द से घबराते न हों तो इसके थोड़े से इस्तेमाल से गृहणियों को एक पहचान, सृजनात्मकता, आत्मबोध यहां तक कि यौनान्द जो उन्होंने कभी अनुभव नहीं किया है, खरीददारी के माध्यम से सुलभ कराया जा सकता है।'

जनसंपर्क माध्यम

हमारे उपभोक्ता समाज में स्त्रियों को किस नज़र से देखा जाता है, जनसम्पर्क माध्यमों में स्त्री का चित्रण उसी की प्रतिछवि है, जनसम्पर्क माध्यम स्त्रियों को घरेलू दासी और बुद्धिहीन कामोत्तेजक सजावट का सामान बनाने की चाल केवल साबुन और हेयर स्प्रे बेचने के लिए नहीं चलते बल्कि ये छवियां स्त्री को उसी रूप में प्रदर्शित करती हैं जिस रूप में लिंगवादी समाज के पुरुष उन्हें देखना चाहते हैं। जनसम्पर्क माध्यमों में चित्रित नारी छवि की सबसे बड़ी बुराई यह है कि वह लिंगवादी हालात को ज्यों का त्यों रखने की पोषक है।

इन तमाम बातों को मद्देनजर रखते हुए खुद महिलाओं को अपनी सोच बनानी होगी क्योंकि यह अपभोक्ताओं की चमकचौंध में हमारा ही दोहरा शोषण है– हमारे ही शरीर को इस्तेमाल करके हमें ही उसके शोषण चक्र में पीसा जा रहा है–यह समझना होगा और ऐसे प्रचार का विरोध करना होगा। □

साभार–
स्त्रियां और प्रचार माध्यम

बच्ची-बूढ़ी करे पुकार
बंद करो यौन-अत्याचार।

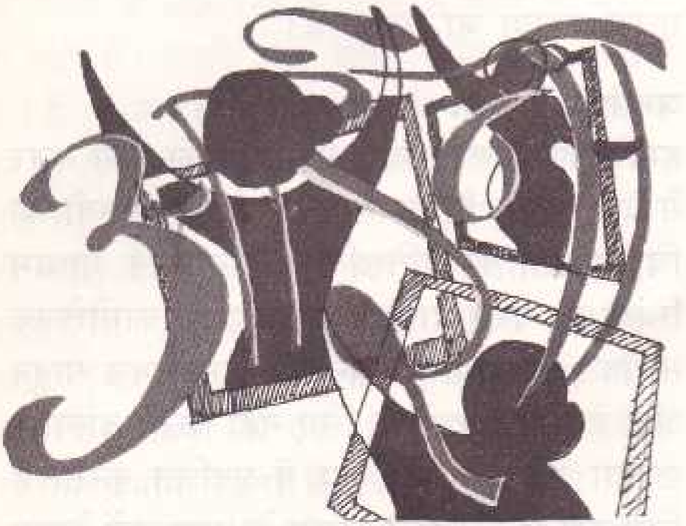

बदलता आईना

आभा भैया

हमारी छवियां
और हमारी बदलती
खिसकती सच्चाइयां
धूप छांव के खेल से परे
खड़ी हैं धुंधलाती
उभरती परछाइयां।
अन्दर-बाहर की दुनिया को
रचते पिरोते
दुख-सुख के
दुशालों से लदी
हम...
संघर्ष और सामर्थ्य
की देहरी पर
खड़ी हैं।
देखो तो सही
हमारे बदलते वजूद को
और अगर कभी
अक्स धुंधलाया नज़र आए
तो याद रखना
कि आईना भी
अपनी जगह बदल रहा है।

अनुवाद
(ए कन्ट्री ऑफ वूमेन)

मैंने सोचा

सुनीता ठाकुर

मैंने सोचा
अपने बारे में
क्या थी क्या हो गई हूं
मन बोला–
सोचना क्या रे
चिंगारी थी
'लौ' हो गई हो।

हमारी धरती हमारा आकाश

नीलम

एक पूरा आकाश
और पूरी धरती
उतनी ही थी 'हमारी'
जितनी कि 'तुम्हारी'
लेकिन हमें–
सोच लेना था,
चलने से पहले, कि–
हर कदम पर होगा
एक जंगल- नागफनी का,
बेंध डालेगा- तन मन।
लेकिन पहुंचना तब भी था–
उस धरती
उस आकाश तक–
जूझना-लड़ना तो भाग्य था
पर उस भाग्य की लकीर-लकीर,
रची थी 'स्वयं हमारी'
यही है 'पहचान हमारी'
न कि किसी की पत्नी, किसी की बेटी,
हर लड़ाई के बाद जीत हमारी–
होगी थोड़ी और बड़ी
मिलेगी इक आस
इक राह मुझे चलते चले जाने को
उस धरती–
उस आकाश तक–।

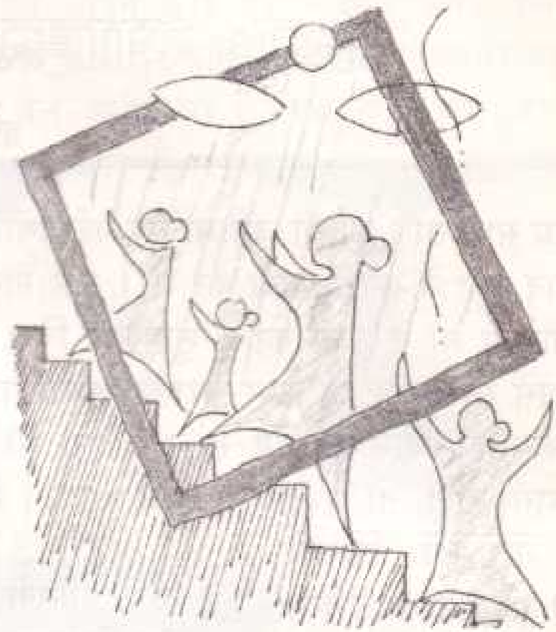

खेल

सुनीता ठाकुर

वो खेल दिखा रही थी
धिन तिनक धिन तिनक धिन धा।
उसने पूछा-'वो क्या है?'
'थाल'... थाल पर खड़ी है न बेटा!
'वो क्या है?'
'वो दीपक है न देखो उस हाथ में भी है न'
'और वो'...
'देखो फूल उठाएगी मुंह से, देखो देखो'
मुझे लगा—
पूरी धरती
उसके विश्वास में जगमगा उठी है
वह एक नहीं
हजार-हजार फूल उठाकर बिखेर रही है-
फिर भी...
खाली हैं हाथ उसके!

मंजू: साहस की मिसाल

सुनीता ठाकुर

मेरी उम्र सात साल की थी जब मां मर गई। थोड़े दिन बाद बाप ने दूसरी शादी कर ली। कुछ दिन बाद सौतेली मां ने जुल्म करना शुरू कर दिया। वह मुझसे सारा घर का काम कराती। खेतों पर काम कराती। खाने को ढंग से नहीं देती थी। कभी बासी रोटी, तो कभी जला हुआ चावल। मैं आधा तन ढके फिरती रहती। गंदे फटे कपड़े देती थी-पहनने को। न धुलने के लिए साबुन, न नए कपड़े सिलवाना। बापू को सिखा देती तो बाप भी मारता-पीटता था। आखिर तंग आकर मैं बारह साल की उम्र में अपने ननिहाल भाग गई।

> शक्तिशालिनी के ऑफिस में आई इस बहन की हिम्मत देखकर मन में आशा के हजारों दीप जगमगा उठे—जहां ऐसी अनूठी आस्था हो, विश्वास हो, लगन हो तो कौन महिलाओं पर अत्याय कर सकता है। जरूरत सिर्फ एक तनी हुई मुट्ठी की है। वह मुस्कुरा रही थी—ठीक कह रही हूं न दीदी—'अन्याय करने वाले से सहने वाला ज़्यादा गुनहगार होता है। मैं क्यों सहूं?

मेरा ननिहाल बहुत अच्छा था। वे लोग पैसेवाले थे। नाना-नानी बहुत प्यार करते थे। मैं वहां रहने लगी। थोड़े दिन बाद ही बाप भी वहां पहुंच गया। नानी-नाना को शराब पीकर गाली दी— 'तुमने मेरी बेटी को भड़काया है।' मुझे भी मारा-पीटा। नानी-नाना ने धमकाया तो चला गया, लेकिन अब वह बार-बार आकर हंगामा करता। हारकर नानी-नाना ने वापस जाने को कहा। उनकी बदनामी होती थी। मैं सौतेली मां के पास नहीं जाना चाहती थी। नानी के घर से भाग गई। मुझे पता नहीं कहां जाना था। चलती रही-छुपते-छुपाते। भूखी-प्यासी तीन दिन तक भटकती रही। सड़क पर चलते-चलते एक आदमी से खाने को मांगा तो उस आदमी ने मदद की। वह मुझे घर ले गया। वह एक डॉक्टर था —होम्योपैथी का। मैं उसके घर का काम करने लगी। बदले में उसने मुझे रहने और खाने को दिया अब मैं खुश थी। वो मुझे मेरे बाप जैसा लगता। वो भी मेरा बहुत ख्याल रखता था।

एक दिन उसने मुझे रात को दूध पीने को दिया। उस दिन मुझे बुखार था। दवा के बाद दूध पी लिया मैंने। मुझे नहीं पता था दूध में नशे की गोली मिली थी। दूध पीते ही थोड़ी देर बाद मुझे नींद आने लगी। अब उसने मुझे गोद में लेकर बिस्तर पर लिटा दिया। मैं नशे में थी—चाहकर भी कुछ नहीं कर पायी। आखिर में बेहोश हो गयी थी। डाक्टर ने मेरे साथ बलात्कार किया।

सुबह मेरे सारे कपड़े लाल थे। बहुत दर्द हो रहा था। मैं बहुत रोई। वापस चलने लगी तो उसने रोक लिया। कहा कि किसी से मत कहना-बदनामी होगी- मैं तुमसे शादी कर लूंगा—वैसे भी तुम्हारा कोई नहीं है। अब यह रोज का किस्सा हो गया। मैं साढ़े-बारह साल की थी जब मुझे

गर्भ रह गया। तेरह साल की उम्र में एक लड़की रश्मि पैदा हुई। अस्पताल से लौटी तो पता चला उसकी पहले से दो बीवियां और भी हैं। दूसरी पत्नी ने सब कुछ बता दिया। पहली बीवी देहात में छोड़ आया था। उसने हर कदम पर मुझे धोखा दिया। मेरी हिम्मत टूटने लगी थी पर अब मैं जाती कहां। उसने मुझे तरह-तरह से समझाना शुरू किया। हारकर किस्मत से समझौता करने की ठान ली। धीरे-धीरे घर में झगड़े होने लगे। उसकी दूसरी बीवी मुझे निकालने के लिए झगड़ने लगी। डॉक्टर भी मुझे शराब पीकर मारता-पीटता।

एक दिन घर पर अकेली थी। कुछ औरतें पढ़ाई-लिखाई का सर्वे करने आईं। मेरे बारे में पूछा। मुझे चेहरे पर चोट लगी थी। उनके बार-बार पूछने पर मैंने रोते-रोते सारी बात बताई। वे लोग मुझे महिला-केन्द्र का पता दे गईं। मदद मिलने की उम्मीद बंधाई। मैं महिला-केन्द्र चली गई। उन्होंने भी मदद की और सारी जानकारी दी। डॉक्टर को पता चला तो उसने मारा-पीटा। अब मैं वापस महिला-केन्द्र में आकर ही रहने लगी। महिला-केन्द्र के मार्फ़त पति के खिलाफ़ रिपोर्ट की। मुकदमा लड़ा। उसे दस महीने की जेल हुई।

मैं नवीं तक पढ़ी-लिखी हूं। महिला-केंद्र वालों ने दिल्ली राष्ट्रीय महिला आयोग का पता दिया। ताकि वहां से मेरी जान बचाई जा सके। बच्ची लेकर दिल्ली आ गई। अब और कोई चाह नहीं है। इसे ही आगे पढ़ाना-लिखाना चाहती हूं। ये बहुत समझदार है। बहुत जल्दी सीखती है। इसे बहुत पढ़ाऊंगी—ताकि ये मेरी तरह कहीं मार न खाए। अपने पैरों पर मजबूत बने। इसीलिए दिल्ली आई हूं। पति के खिलाफ़ मुकद्मा लड़ूंगी। वह बेल-अपील पर छूट गया है तो क्या? हाईकोर्ट

न्याय देगा। मैं उसे छोड़ूंगी नहीं-चाहे जो हो जाए। खूब दिन-रात मेहनत करूंगी। मेहनत से क्या डरना। आप लोग साथ देंगे न। बड़ी उम्मीद लेकर आई हूं। मेरी मेहनत बेकार नहीं जाएगी।

मैं मंजू की बात सुनकर हैरान थी और खुश भी। मेरी आंखें नम थीं। शक्तिशालिनी के ऑफिस में आई इस बहन की हिम्मत देखकर मन में आशा के हजारों दीप जगमगा उठे—जहां ऐसी अनूठी आस्था हो, विश्वास हो, लगन हो तो कौन महिलाओं पर अन्याय कर सकता है। जरूरत सिर्फ़ एक तनी हुई मुट्ठी की है। वह मुस्कुरा रही थी—ठीक कह रही हूं न दीदी—'अन्याय करने वाले से सहने वाला ज्यादा गुनहगार होता है। मैं क्यों सहूं? □

इन औरतों के नाम

जुही

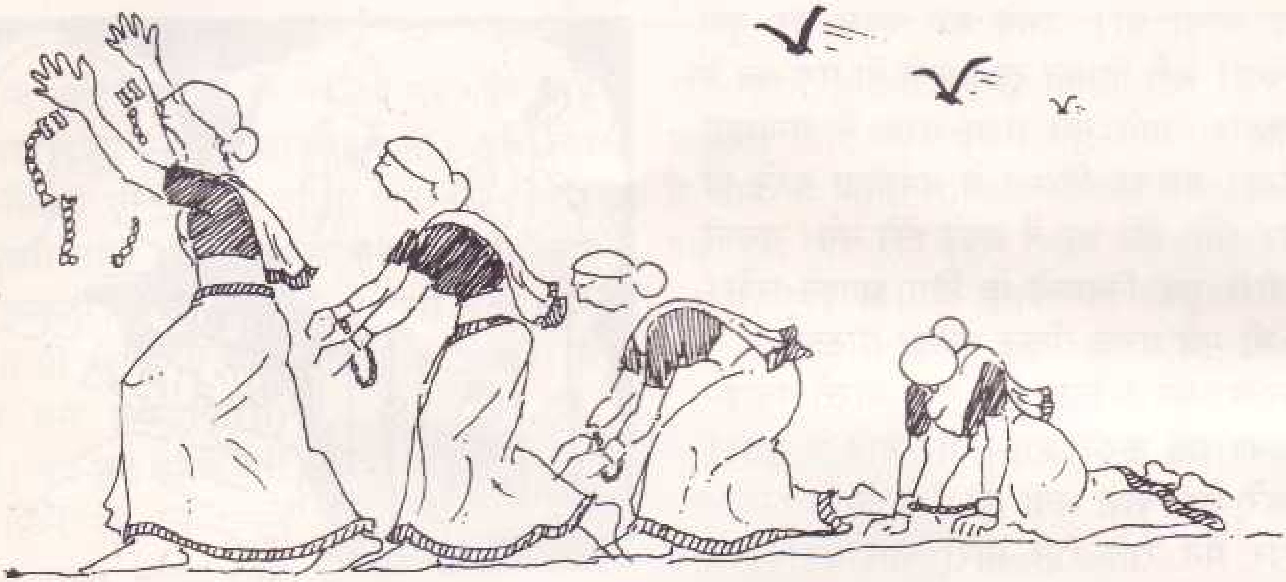

कभी-कभी हम सोचते हैं, दुनिया इक्कीसवीं सदी में पहुंच रही है, पर हम औरतों की हालत में कोई खास फ़र्क नहीं आया। तो फिर इस काम का फायदा क्या? हम आज भी ग़ैर-बराबरी और अन्यायी पितृसत्ता के ढांचे में जी रहे हैं।

ऐसे समय में हमारी मायूसी दूर करते हैं जगह जगह औरतों के प्रेरणादायक-उत्साही अनुभव। ये औरतें और इनके ये संघर्ष अनदेखे और गुमनाम ही रह जाते हैं। ये अक्सर हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। हमारा हौसला बढ़ाते हैं। कठिनाइयों का सामना करने का साहस देते हैं। आइए आज कुछ ऐसी ही मानुषियों से मिलते हैं। इनकी आपबीती सुनें और एक नए जीवन की खोज की प्रेरणा लें।

रजनी की हिम्मत

रजनी की शादी बंगलौर में हुई। उसका पति वहां किसी रेस्तरां में बेयरा था। ससुराल में विधवा सास और दो देवर थे। शादी के दो सालों में उसको एक बेटी हो गई। समय गुजरता गया। पति उसे बहुत प्यार करता था। सलाह-मश्वरा करके ही कोई काम करता था। सास को यह बर्दाश्त न हुआ। डर लगा कहीं बेटा बहू को लेकर अलग न हो जाए। उसने अपने बेटे को ज़हर दे दिया। रोती पीटती रजनी मायके आ गई। मायके में पिता और भाई ने भरपूर प्यार दिया। रजनी फिर भी सोचती ऐसे कब तक चलेगा। उसने तय किया कि वह अपने पांव पर खड़ी होगी। आठवीं पास तो पहले ही थी। पिता की मदद से उसने दसवीं पास की। फिर सिलाई का डिप्लोमा किया। आज रजनी पंद्रह सौ रुपये कमाती है। एक पब्लिक स्कूल में सिलाई-टीचर है। अपने स्कूल में ही उसने अपनी बेटी

को दाखिल करा लिया है। उसने अपने सास और देवर पर मुकदमा किया। दोनों को सज़ा हो गई। आज रजनी खुश है, क्योंकि उसने अपनी ज़िंदगी संवार ली है।

शबनम बी ने हक़ पाया

शबनम बी एक पढ़ी-लिखी मध्यम परिवार की लड़की थी। बी.ए. पास करते ही मां-बाप ने शादी तय कर दी। पति डाक्टर था। ससुराल में सभी से मान-प्यार मिला। चार साल गुजर गये। एक दिन उस पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा। स्कूटर दुर्घटना में पति गुजर गये। शबनम बी पर जिम्मेदारियों का बोझ बढ़ गया। दो बच्चे थे। दोनों जुड़वां, साल भर के दोनों विक्लांग। इधर पति गुजरा उधर ससुराल वालों ने उसे अभागिन-अशुभ मानना शुरु किया। जेठ ने भी शबनम बी पर बुरी नजर डाली। अब आसरा सिर्फ मायके का ही था, पर मायके से भी साफ झंडी मिल गई। मां-बाप बोले-तू यहां रहेगी तो ससुराल का हिस्सा गवां देगी। वैसे यह तेरा घर है। अकलमंद को इशारा काफ़ी। शबनम की रही-सही आस भी जाती रही। शबनम ने हिम्मत नहीं हारी। उसने एक घर में गवर्नेस की नौकरी कर ली। पैसे जोड़े अपने नाम से जमीन खरीदी। और उस पर दो कमरे का मकान बनाया। साथ ही ससुराल की जायदाद में अपने हिस्से का दावा किया। जेठ ने गुंडे भेजे। उसे डराया-धमकाया, मारा पीटा, पर शबनम बी डरी नहीं। तीन साल बाद फैसला हुआ। शबनम बी के पक्ष में। जेठ हार गया। शबनम बी को अपना हक़ मिला। है न इनका जीवन हमारे लिए एक मिसाल।

रोज़ी की लगन

बचपन से ही रोज़ी गूंगी-बहरी थी। उसका एक हाथ भी एक्सीडेंट में कट गया था। रोज़ी के मां-बाप ने उसे बी.ए. पास कराया। फिर सोचा कोई अच्छा लड़का देख शादी कर दें, पर रोज़ी ने सख्ती से इन्कार कर दिया, उसने सेक्रेटरी का दो साल का कोर्स किया, पर फिर भी टाइपिंग नहीं कर पाती थी। रोज़ी की सहेली से पता चला कि आजकल अस्पताल में नकली अंग लगने की संभावना है। सहेली के साथ रोज़ी अस्पताल गई। वहां उसको लकड़ी का हाथ लगाया गया। अब रोज़ी ने प्रेक्टिस की। दोनों हाथों से आज वह हमारी आपकी तरह काम कर सकती है। उसने शादी न करने का फैसला किया है और अपनी जिंदगी की नए सिरे से शुरुआत करके बहुत खुश है। □

मुट्ठी तानो मांगो हक
रह जाए दुनिया हकबका।

गौरा देवी

सुनीता ठाकुर

"...जंगल बचेगा तो हम रहेंगे, हम सब एक होंगे तो जंगल बचेगा, जंगल हमारा रोजगार है... मायका है... जिन्दगी है..."

—गौरा देवी
(1925-91)

'चिपको आन्दोलन' पर कोई भी चर्चा श्रीमती गौरा देवी का नाम आये बिना पूरी नहीं कही जा सकती। गांव की इस कर्मठ व अनपढ़ महिला ने अपने जंगलों की रक्षा के लिए गांव-गांव की महिलाओं को एकजुट किया। सम्पूर्ण विश्व में महिला आन्दोलनकारियों में इस देवी का नाम सदा आदर के साथ लिया जाएगा।

बाल विवाह और मुसीबतें

गौरादेवी का जन्म 1925 में चमोली जिले की नीति घाटी में लाता गांव के 'मार्च्छा' परिवार में हुआ था। गौरा देवी का एक अन्य नाम नन्दा देवी था। स्कूल की व्यवस्था न होने के कारण गौरा देवी आगे न पढ़ सकी, लेकिन उन्होंने ऊनी व्यवसाय सीखा था। जैसे ही गौरा देवी १२ साल की हुई मां को विवाह की चिन्ता हुई। लड़की को बड़ी होते देख मां बोली 'लड़की बारह साल की हो गई है। अभी तक इसकी शादी नहीं हुई।" पिता ने मां को समझाया—"तू फिक्र मत कर। मैं लड़का ढूंढता हूं। पास के ही रैवी गांव के नैन सिंह व हीरा देवी के बेटे मेहरबान सिंह से गौरा देवी का विवाह हो गया। ससुराल में पशु पालन ऊनी कारोबार व छोटी सी खेती थी। 19 वर्ष की आयु में गौरा देवी का एक बेटा हुआ। घर में खूब खुशियां मनाई गईं। गौरा देवी 22 वर्ष की थी तो उनके पति की मृत्यु हो गई। उनका बेटा चन्द्रसिंह उस समय केवल ढाई वर्ष का था।

विधवा को समाज में अनेक संकट व यातनाओं से गुजरना पड़ता है। गौरा देवी ने भी बहुत संकट झेले, पर वह अडिग रही और स्वयं खेतों में काम किया। पड़ोसियों से ऊन उधार मांगकर ऊनी कारोबार चलाया। बेटे को पाल-पोसकर बड़ा किया और अपने पैरों पर खड़ा होने लायक

बना दिया। बड़ा होकर बेटे ने मां का काम संभाल लिया।

गौरा देवी ने अपना जीवन समाज के कार्यों में लगाना शुरू किया। वह कभी भी पंचायत के कार्य में पीछे नहीं रही। गांव के अन्य सामूहिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेती थी। समाज सेवा की प्रेरणा उन्हें आस-पास की गरीबी से जूझती बहनों व स्वयं की त्रासदी की मार से मिली। कर्म में उनका अटूट विश्वास था।

चिपको आंदोलन

1993 में चिपको आन्दोलन के दौरान रेगी की महिलाओं ने भी अपने गांव में महिला मंगल दल बनाने की सोची। सबकी सहमति से गौरा देवी महिला मंगल दल की अध्यक्ष बनीं। इस दल ने

ग्राम की सफाई से लेकर जंगल की रक्षा तक की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली।

1973 में 'चिपको आन्दोलन' जोर पकड़ने लगा। मंडल व फाटा के अतिरिक्त रेगी में भी इसका प्रभाव पड़ा। समाज के कार्यों में जुटी गौरा देवी ने गांव की महिलाओं का एकत्र किया और कहा 'जंगल हमारे देवता हैं, हम इन्हीं के बलबूते पर जीवित हैं। जंगल न रहे तो भूस्खलन (धरती का खिसकना) होगा, बाढ़ आएगी। इसलिए हमें जंगलों की रक्षा करनी है। उन्हें किसी भी कीमत पर कटने नहीं देना। गौरा देवी गांवों में घूम-घूमकर 'जंगल बचाओ' के बारे में गांव वालों को समझाती रही।

1974 में सरकार ने ठेकेदारों को 'रेगी' के जंगल काटने का ठेका दे दिया। लोगों ने जंगल कटने के विरुद्ध प्रदर्शन किए, नारे लगाए 25 मार्च 1974 को गांव के सभी पुरुष रेगी से बाहर गए हुए थे। ठीक यही दिन जंगल काटने के लिए निश्चित हुआ था। 26 मार्च गाय-भैंस चरा रही एक लड़की ने दिन में बारह बजे यह हलचल देखी और दौड़ी-दौड़ी गौरा देवी के पास गई और कुल्हाड़ी लिए जंगल की ओर जा रहे लोगों की खबर दी। गौरा देवी ने 27 महिलाओं को इकट्ठा किया और बोली "आज हमारी परीक्षा का दिन है और सभी स्त्रियां जंगल की ओर चल पड़ीं। वे गंभीर थी। एक अनजाना भय और आत्म-विश्वास दोनों साथ-साथ थे।

जंगल में पहुंचकर गौरा देवी ने नरमी से मजदूरों को लौट जाने के लिए कहा। वन-विभाग के लोगों ने विरोध किया। शराब पीये हुए कुछ लोगों ने महिलाओं के साथ गलत व्यवहार किया

वन विभाग के कर्मचारी ने मजदूरों को पेड़ काटने का आदेश दिया। अब स्त्रियां गुस्से में आ गईं। उनकी एकता और क्रोध देखकर मजदूरों में भगदड़ मच गई। महिलाओं ने आपस में मंत्रणा की और सीमेंट का जो पुल जंगल तक आता था-उसे तोड़ दिया। गौरा देवी के साथ महिलाओं ने जो कर दिखाया उससे दूसरे गांवों की महिलाओं ने भी प्रेरणा ली ओर अपने वनों की रक्षा की।

गौरा देवी 'चिपको' और इसमें महिलाओं की भागीदारी की प्रतीक बन गईं। उन्होंने महिलाओं को संदेश दिया कि वे अकेली या दुर्बल नहीं हैं। अगर उनमें आत्मविश्वास और लगन है तो वे अपनी समस्याएं खुद सुलझा सकती है।

अन्य सामाजिक कार्य

गौरा देवी केवल रैगी तक ही सीमित न रहीं। बद्रीनाथ के ऐतिहासिक मंदिर को बिड़ला द्वारा 1974 में नुकसान पहुंचाया जाने लगा तो महिलाओं को साथ लेकर 'बद्रीनाथ मंदिर बचाओ' अभियान चलाया। इस प्रकार जंगल संरक्षण के लिए गांवों में हर स्त्री-पुरुष, बच्चों को जागरूक करती हुई गौरा देवी जीवन के आखिरी दिनों में गुर्दे और पेशाब की बीमारी से घिरी रहीं। 4 जुलाई, 1991 में गौरा देवी का निधन हो गया।

गौरा देवी आज इस संसार में नहीं हैं, लेकिन वह रैगी की हर महिला के अंदर जिन्दा है। उन्हीं की कोशिश से 'चिपको आन्दोलन' गांव-गांव में और संसार-भर में फैला। 'वनों की रक्षा, देश की रक्षा', 'वन सूंघो भाग जाओ', 'हिमपुत्री' की ललकार, वननीति बदले सरकार', आदि नारों की घोषणा करते हुए उन्होंने दिखा दिया कि एकजुट होकर महिलाएं कुछ भी कर सकती हैं। ☐

संपादित लेख–(उत्तराखण्ड की सबलाएं)

ओ हिम्मत वाली बहना हमें तो संगठन से मिला दे री...
ना चईयें तेरे बाग बगीचे ना चइयें
ना चईयें तेरा माली हमें तो मालिन से मिला दे री।

ओ हिम्मत ...
ना चईयें तेरे ताल तलईया ना चई...
ना चईयें तेरा धोबी हमें धोबिन से मिला दे री।

ओ हिम्मत...
ना चईयें तेरे कुनबे कुबटिया ना चई...
ना चईयें तेरे मिस्तरी हमें बहनों से मिला देरी।

ओ हिम्मत...

...और फैसला हो गया

शशि मौर्य

नगली गांव की ममता का विवाह चार साल पहले फतेहपुर गांव के विजय से हुआ था। दो भाइयों की अकेली बहन। मां बचपन में ही गुजर गई थी। शादी के बाद ममता ने एक बच्चे को जन्म दिया। बच्चे के जन्म के समय से ही वह बीमार रहने लगी। कुछ दिनों बाद उसे पिता अपने घर लिवा लाए। वहां उसका बच्चा मर गया। इसके बाद ससुराल से लेने आए, पर वह गई नहीं। इस बात को दो साल हो रहे थे।

गांव में महिला-समाख्या कार्यक्रम चला। मीटिंग होती थी जिसमें बहनें अपने दुख-सुख की बातें करतीं। ऐस ही एक बैठक में ममता का मामला सामने आया।

एक सच्चाई

दलित वर्ग का यह परिवार बहुत सम्पन्न नहीं है तो बहुत गरीब भी नहीं है। विजय एक सीधा सादा-सरल युवक है। ममता के मुताबिक उसने उसे कभी डांटा या मारा नहीं। फिर क्या कारण है कि वह नहीं जाना चाहती? ज्यादा कुरेदने पर ममता ने बताया कि उसका पति सीधा-सरल नहीं, दिमागी तौर पर कमजोर है। उसमें भावनाएं ही नहीं हैं। सास भी सीधी है। ससुर ने ममता को दवा में कोई ऐसी चीज़ खिला दी थी जिसके कारण उसे हरदम ससुर के पास रहना ही अच्छा लगता था। ससुर पास में खाट बिछाकर सोता था। विजय पर इस बात का कोई असर ही नहीं होता था। ममता ने बहुत संकोच के साथ बताया कि विजय को सम्बन्ध बनाना भी नहीं आता था। ममता को डर है कि पति उसकी रक्षा नहीं कर पायेगा और ससुर उसे छोड़ेगा नहीं। इस कारण वह पति से अलग होना चाहती है।

पांच महीने से इसी केस पर बातचीत चल रही थी। कोशिश यही थी कि परिवार न टूटे, पर ममता अपनी बात पर अड़ी रही।

फैसला हुआ

16 जनवरी को दोनों पक्षों को ब्लॉक ऑफिस में बुलाया गया। लड़की वाले डर रहे थे कि वे उसे उठा ले जाएंगे। लड़के वाले ममता को भी मीटिंग में बुलाने की ज़िद पकड़े थे। बहुत समझाने बुझाने पर वे दहेज का सामान लौटाने को तैयार हुए। दोनों पक्षों के करीब तीस-चालीस स्त्री-पुरुष आए। लोग हंस रहे थे कि ये औरतें क्या फैसला करवाएंगी।

माहौल तनावपूर्ण बना हुआ था। लड़के वाले लड़की से ही पूछना चाहते थे कि वह उनके साथ रहना चाहती है या नहीं। ममता को बुलाया गया और उसने सबके सामने कह दिया कि वह ससुराल में नहीं रहना चाहती।

दोनों पक्षों ने अपने सामान की सूची बताई जिसमें

से खाने पीने का खर्च हटा दिया। बात यहां अटक गई कि दहेज का सामान लेने लड़की वाले जाएं। लड़की वालों ने मना कर दिया। वे कह रहे थे कि यही ब्लॉक में लाकर दें। उन्हें मार-

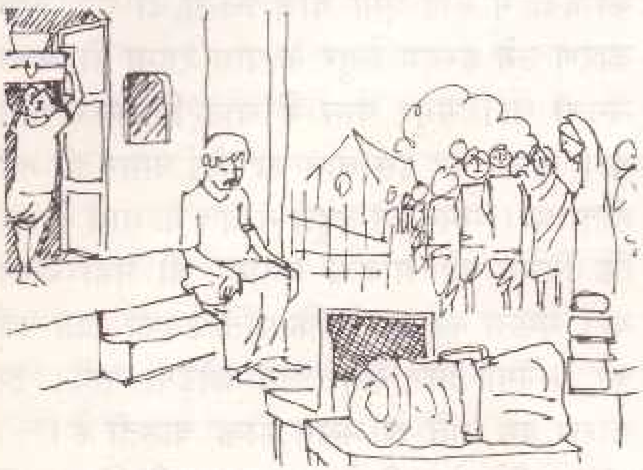

पीट का डर था। अन्त में यही फैसला हुआ कि ब्लॉक आफिस से हम बहनें ही जाएंगी और लड़की वालों की गाड़ी में सामान ले आएंगी।

दहेज वापिस दिलवाया

हमारे गांव पहुंचते ही सब इकट्ठा हो गए। हमने अपनी बात शुरू कर दी। लड़के के पिता ने सामान निकालना शुरू कर दिया था। सामान निकालते-निकालते वह रो पड़ा। बहुत सहेजकर सब रखा था। उन्हें अपनी बेइज्जती महसूस कर रहे थे। सामान का लेन देन करके कागज पर हस्ताक्षर करवाकर दोनों का फैसला करवा दिया गया।

जीत की खुशी

सुबह से शाम हो गयी थी। सभी के चेहरों पर थकान थी, लेकिन खुशी भी कि फैसला हो गया। बाद में दोनों पक्ष हमें कुछ देने लगे—चाय-पानी को। मगर हमने मना कर दिया। सब हैरान थे कि बिना किसी स्वार्थ के हम इस केस में क्यों रुचि ले रहे थे। ममता के मुक्ति के अहसास से फूली नहीं समा रही थी।

इस केस की आसपास के गांवों में बड़ी चर्चा है। दहेज लौटाने की बात पर कई लोग बहुत नाराज है। उन्हें लग रहा है कि यदि ऐसा ही होने लगा तो सभी को सामान वापिस करना पड़ेगा। मगर दोनों पक्ष खुश हैं—उन्हें लग रहा है कि पुलिस की जिल्लत से बच गए। इस इलाके में छोटी-मोटी बात पर औरत को छोड़ देना, दूसरी शादी कर लेना आम बात है। दहेज की वापसी ने ऐसे लोगों को झकझोर दिया है। वहीं लड़की वाले खुश हैं कि सामान आ गया। जाने-अनजाने हमने एक समाज-व्यवस्था को छेड़ने का दुस्साहस किया है। □

अपना क़ानून अपना न्याय
हम बहनों ने लिया बनाय।

योनि संक्रमण

कल्पना देवास

लगभग सारे देश में योनि संक्रमण औरतों की सबसे आम तकलीफ़ है। योनि संक्रमणों तथा प्रजनन मार्ग के अन्य संक्रमणों का औरतों के जीवन पर बहुत दूरगामी असर पड़ता है। अधिकांश औरतें इन प्रभावों को चुपचाप सहती रहती हैं।

खून के अलावा योनि से होने वाले अन्य स्राव को हिन्दी में सफेद पानी, मालवी (मध्यप्रदेश के मालवा क्षेत्र की बोली) में धौला पानी, गुजराती में शरीर धोवाय, कन्नड़ में बिल्ली बट्टे तथा तेलगु में तेलाबट्टा कहते हैं।

हमारे शोध के सभी इलाकों में औरतों महिला लोकचिकित्सकों के बीच, औरत के शरीर की गर्मी तथा योनि स्राव और ठंडी गर्म तासीर के भोजन के बीच सम्बन्ध होने के बारे में सहमति थी। आमतौर पर होने वाला योनि स्राव जब बढ़ जाता है तो अत्यधिक स्राव कहलाता है। गर्मी, ऊष्मा या वेदी (सभी का अर्थ गर्मी है) के कारण होने वाले अत्यधिक स्राव से छिलन और बेचैनी हो जाती है। इसके उपचार के लिए शताब्दी (Asparagew racemosus) सौंफ (Sweet fennel) के साथ मिश्री, कच्चा नारियल आदि से बने हरे और पोषक खाद्य पदार्थों की सिफारिश की जाती है। भोजन में चावल, छाछ तथा बगैर मिर्च मसाले की चीजें खानी चाहिए।

देवास तथा पंचमहल क्षेत्र की औरतों के अन्य विश्वास हैं कि नसबन्दी कराने, जचगी के समय देखभाल न होने तथा पति के अनेक यौन संबंधों के कारण औरत को योनि संक्रमण हो सकता है। हमारे सभी क्षेत्रीय कार्य क्षेत्रों में यह विश्वास बहुत प्रचलित पाया गया कि नसबन्दी के बाद समस्याएं बढ़ जाती हैं। इसे कमज़ोरी का कारण और प्रभाव दोनों बताया गया। बार बार अपने आप गर्भपात हो जाए, बहुत अधिक संभोग किया जाए या साथी को संक्रमण हो तो औरत को योनि संक्रमण हो सकता है।

आंध्र प्रदेश तथा कनाटक के वैद्य मानते हैं कि यदि स्त्री और पुरुष दोनों संभोग के बाद अपने अंगों को धो लेते हैं तो उन्हें संक्रमण नहीं होगा। पंचमहल गुजरात के आदिवासियों का मानना है कि अगर डाकिन चिपट जाए तब भी यौन संक्रमण हो सकता है। इस समस्या के बारे में आमतौर पर वे पति के साथ चर्चा करती हैं ताकि दर्द भरे संभोग से बच सके। अगर पति अच्छा होता है

तो वह उसे इलाज के लिए कारीगर, बड़वा या भगत के पास ले जाता है। ये पारम्परिक लोक चिकित्सक प्रायः कुछ जड़ी-बूटियां देते हैं और कुछ निश्चित समय के लिए यौन संबंधों से दूर रहने की सलाह देते हैं। अत्यधिक तनाव और दबाव से भी योनि संक्रमण हो सकता है।

योनि स्राव

योनि में अनेक अति सूक्ष्म जीवाणु रहते हैं जिनमें कुछ मददगार होते हैं जैसे लेक्टोबैसिली तथा कुछ फंगी यीस्ट आदि की तरह नुकसानदेह। आमतौर पर योनि की दीवार की झिल्ली से निकलने वाला स्राव सामान्य योनि स्राव कहलाता है। योनि स्राव फ़ायदेमंद होता है तथा इससे डरने की कोई ज़रूरत नहीं है।

जब योनि के जीवाणुओं का नाजुक संतुलन बिगड़ जाता है तो योनि में मौजूद हानिकारक जीवाणुओं की संख्या तेजी से बढ़ जाती है। ये हानिकारक जीवाणु बड़ी मात्रा में फालतू पदार्थ निकालते हैं जिससे योनि की भीतरी झिल्ली छिल जाती है और संक्रमण हो जाता है। स्राव में बदबू पैदा हो सकती है तथा योनि के भीतरी होठों में हल्की या तेज खुजली और जलन, संभोग के समय दर्द, जांघों में छिलन तथा कभी-कभी बार बार पेशाब आना शुरू हो सकता है।

योनि संक्रमण के कारक तत्व

योनि, बाकी शरीर से अलग-थलग अंग नहीं है। हमें जो कुछ शारीरिक तथा मानसिक रूप से होता है उसका प्रभाव योनि पर भी पड़ता है। अनेक ऐसे कारक तत्व हैं जिसके कारण योनि संक्रमण हो सकता है। जैसे शरीर में सामान्य रूप से गिरी हुई प्रतिरक्षण क्षमता (तनाव, नींद की कमी, कुपोषण, शरीर में अन्य जगह संक्रमण) गर्भावस्था, खून की कमी, गर्भ निरोधक गोलियां, अन्य हारमोन या ऐन्टीबायोटिक दवाइयां अथवा कॉर्टिसोन लेना (ऐन्टीबायोटिक दवाइयों से योनि के लाभकारी जीवाणु भी मर जाते हैं। इसीलिए लम्बे समय तक ये दवाइयां लेने के बाद अचानक योनि में फंगी संक्रमण बढ़ जाता है। इसी प्रकार गर्भ निरोधक गोलियों में मौजूद हारमोन के प्रभाव से योनि स्राव का स्वरूप बदल जाता है तथा परिणामस्वरूप संक्रमण का ख़तरा हो जाता है) मधुमेह होने या उससे कुछ पहले की स्थिति में तथा प्रसव के कारण अथवा संभोग के बाद योनि की सफ़ाई न होने आदि से भी संक्रमण हो सकता है।

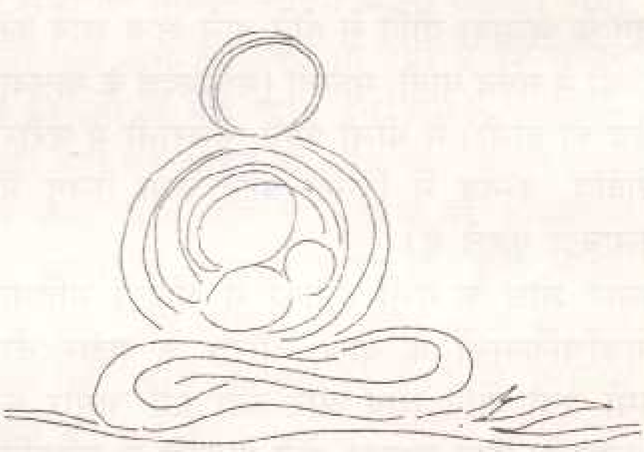

अन्य कारक तत्व हैं, अस्वच्छ तौर-तरीके जैसे माहवारी में गन्दे कपड़े का इस्तेमाल (हमने देहाती व शहरी गरीबों में प्रायः यह समस्या देखी है क्योंकि या तो धूप में कपड़ा सुखाने की जगह नहीं होती या शर्म और अन्य बंधनों के कारण ऐसा नहीं कर पाती) योनि के भीतर टैम्पून छोड़ना अथवा बाल, पत्थर आदि (कुछ मामलों में हमने

पाया जहां औरतों ने तांत्रिक/जादू टोने से इलाज कराया था) संक्रमण वाले साथी के साथ यौन संबंध (यह काफ़ी आम बात है) बच्चेदानी के मुंह पर घिसन या छिलन, जचगी के बाद अथवा माहवारी सदा के लिए बंद होने के दौरान या बाद में यौनि का सूखापन, गंदे हालात में गर्भपात कराना, चिकित्सा कर्मचारियों की लापरवाही के चलते आइ यू डी या कॉपर टी लगाते समय सफ़ाई का ध्यान न रखना अथवा असामान्य स्राव की दशा में इन्हें लगा देना।

सूक्ष्मदर्शी द्वारा सफेद पानी या धात की जांच से एक स्वास्थ्य कार्यकर्ता यह पता कर सकती है कि कोई बीमारी है कि नहीं।

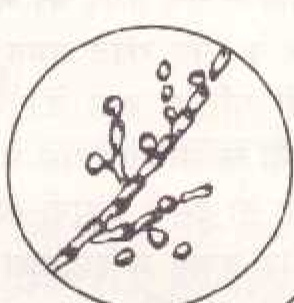

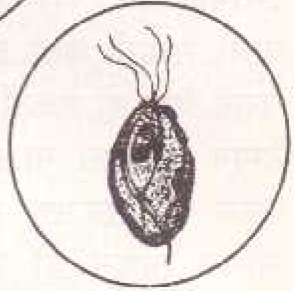

सूक्ष्मदर्शी के नीचे 'यीस्ट संक्रमण' कुछ इस तरह दिखता है।

आम संक्रमणों की तुरंत पहचान

यदि भीतरी होठों, योनि और जांघों पर खुजली और जल के साथ बदबूदार डेसिमान्य रंग का स्राव आ रहा है तो योनि संक्रमण है। अधिक स्पष्ट निदान करने के लिए स्पेक्युलम से जांच करनी जरूरी हो सकती है। जांच से पता लग सकता है कि शायद योनि अथवा बच्चेदानी का मुंह सामान्य से ज़्यादा लाल हो या उस पर लाल चकत्ते हों। स्पेक्युलम पर लगे स्राव का रंग, गाढ़ापन और गन्ध से भी निदान करने तथा संक्रमण की किस्म जानने में मदद मिलेगी।

संक्रमण की रोकथाम

1. अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। यदि आप में खून की कमी है या अभी हाल में मलेरिया, टाइफाइड, फ्लू या बुखार आदि हुआ है, सामान्य स्वास्थ्य को, पोषक भोजन, पर्याप्त आराम तथा चिंता-तनाव कम करके सुधारे।
2. अपने हाथ से योनि के भीतरी होठों को साफ़ करें। हल्का साबुन इस्तेमाल करें। प्रायः खुशबूदार साबुन जलन पैदा करते हैं।
3. पाखाना करने के बाद गुदा को साफ़ करते समय सफ़ाई आगे से पीछे की ओर करें ताकि पाखाने में मौजूद जीवाणु योनि में या मूत्रद्वार में न चले जाएं।
4. अगर आप जांघिया/चड्डी पहनती हैं तो साफ़ सूती पहने, नायलॉन की नहीं। नायलॉन के जांघिये हवा आने जाने को रोकते हैं, शरीर की गर्मी और नमी को भीतर ही रखते हैं जिससे नुक्सानदेह जीवाणुओं के बढ़ने में मदद मिलती हैं तथा उनसे संक्रमण हो सकता है।
5. यदि आप माहवारी के खून को सोखने के लिए कपड़े का इस्तेमाल करती हैं तो सुनिश्चित करें कि वह सूती हो तथा साफ हो। अगर आपको कम खून आता हो तब भी कपड़ा बार-बार बदलें। उसे साबुन से धोकर धूप में सुखाएं। नीम की पत्तियां प्राकृतिक कीटाणुनाशक हैं। नीम की पत्तियां रातभर

पानी में भिगोएं और सुबह उस पानी से कपड़ा धो लें। बाद में सूखे कपड़े को भविष्य में इस्तेमाल करने के लिए रखते समय बीच में नीम की सूखी पत्तियां डाल दें। अगर किसी खास कम्पनी के सेनिटरी पैड से जलन या खुश्की होती है तो दूसरी कम्पनी का पैड इस्तेमाल करें। पैड बनाने में इस्तेमाल होने वाली सामग्री यहां तक कि खुशबू से भी जलन पैदा हो सकती है।

टैम्पून इस्तेमाल ना ही करें तो अच्छा है उससे भी संक्रमण हो सकता है। बहुत अधिक सोखने की शक्ति वाले टैम्पून से टी.एस.एस. (Toxic Shock Syndrome) हो सकता है जिसमें फ्लू के जैसे लक्षण दिखाई देते हैं जैसे बुखार, जी. मचलाना, उल्टी तथा लाल ददोड़े होना टी.एस.एस. ज़हर पैदा करने वाले जीवाणुओं की बढ़ोतरी से होता है।

6. ज़्यादा देर तक गीले जांघिये या गीले पेटीकोट में न रहें क्योंकि नमी के वातावरण में नुकसानदेह जीवाणु तेजी से बढ़ते हैं। धोने के बाद अपने यौन अंगों को पूरी तरह सुखा लेने से भी संक्रमण से बचा जा सकता है।

7. बहुत ज्यादा चाय, कॉफी, मिर्च मसाले और चीनी न लें।

8. संभोग से पहले और बाद में पेशाब कर लें। संभोग के बाद योनि के भीतरी होठों को सिर्फ़ पोंछने की जगह पानी से धो लें। अगर धोना संभव न हो तो साफ़ सूखे कपड़े से पोंछें।

9. अपने यौन साथी से रोज़ अपना लिंग साफ़ करने के लिए कहें खासतौर पर संभोग से पहले। लिंग के आस-पास की ढीली चमड़ी की भी अच्छी तरह सफ़ाई करने के लिए प्रोत्साहित करें।

10. संभोग करने से योनि में दर्द होता हो या छिलता हो तो जहां तक संभव हो संभोग न करें। आप चिकनाई के रूप में किसी तेल या थूक का प्रयोग भी कर सकती हैं। □

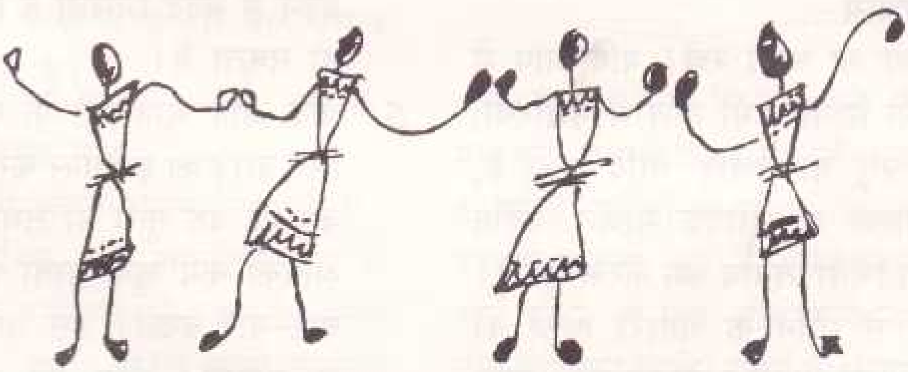

हमारा पन्ना

घर का काम है सब का काम

मिल जुल कर हम करते काम
मिल कर ही करते आराम
खेत पे हम सब मिल कर जाते
काम भी करते गीत भी गाते
पानी की गगरी भरने में
बाबा, रामू न शरमाते
बारी बारी पकायें रोटी
चाहे बने वो तिरछी मोटी
झाड़ पोंछ की ज़िम्मेदारी
हम सब लेते बारी बारी
मां का ही सब नहीं है काम
घर का काम है सब का काम

कोतवाल की पत्नी

एक नगर में दो भाई रहते थे। एक बहुत अमीर था और दूसरा बहुत गरीब था। अमीर के कोई औलाद न थी और गरीब की एक लड़की थी जो बहुत चतुर थी। जब वह लड़की बारह वर्ष की हुई तो उसका पिता उसे अपने अमीर भाई के पास ले गया और कोई काम मांगा। अमीर भाई ने उस लड़की को अपने घर में दासी की जगह दी और वचन दिया कि यदि उसने चार वर्षों तक ठीक काम किया तो वह उसे एक दुधारू गाय देगा। लड़की ने मन लगाकर बड़ी मेहनत से घर का काम किया और चार वर्ष के बाद अपने बीमार पिता की सेवा के लिए घर लौटना चाहा। वचन के अनुसार उसने अपनी सेवा के बदले अपने चाचा से एक गाय मांगी। चाचा लालची था और उसकी नीयत गाय देने की न थी। वह बोला, "गाय तो बहुत रुपयों की आती है। तुम गाय के बदले कुछ रुपये क्यों नहीं ले लेतीं।" लड़की बहुत स्वाभिमानी थी और चाचा की नीयत को भांप रही थी, सो दुखी होकर बिना कुछ लिए अपने घर लौट गई। उसने अपने पिता को सारी

बात बतायी और शहर के कोतवाल से इसकी शिकायत करने को कहा।

पिता कोतवाल के पास पहुंचा। कोतवाल भ्रष्ट था और धनी व्यक्तियों के विरुद्ध कुछ भी करने से डरता था। उसने एक तरकीब सोची। दोनों भाइयों को बुलाकर वह बोला, "मैं तीन सवाल पूछता हूं। तुम दोनों में से जो भी कल तक ठीक उत्तर देगा फैसला उसी के हक में दिया जाएगा।" उसने पूछा, "दुनिया में सबसे तेज क्या है? दुनिया में सबसे मीठा क्या है? दुनिया में सबसे धनी कौन है?" अमीर ने घर जाकर अपनी पत्नी से सब बात कही। वह बोली, "ये भी काई सवाल हैं? अभी हल किये देती हूं। सबसे तेज हमारा काला घोड़ा है जो हवा की गति से भागता है। सबसे मीठा हमारे बाग की मधुमक्खियों का बनाया शहद है और सबसे ज्यादा धन हमारी तिजोरी में है।" उधर निर्धन ने घर जाकर अपनी बेटी को सब हाल कहा। उसने अपने पिता से कहा कि वे आराम करें और वह सुबह तक सोचकर उत्तर बता देगी। रात भर सोचकर अगले दिन सुबह वह बोली, "सबसे तेज हैं आंखें। सबसे मीठे हैं स्वप्न और सबसे धनी है किला जिसमें राजकोष सुरक्षित है।"

अगले दिन दोनों भाई अपने उत्तरों के साथ कोतवाल के सामने गए। निर्धन के उत्तर से कोतवाल बहुत खुश हुआ और पूछा कि ऐसे उत्तर उसे कहां से मिले। निर्धन के बताने पर कोतवाल ने उसकी लड़की से मिलने की इच्छा प्रकट की। साथ ही यह शर्त भी रखी कि गाय तभी दिलायेगा जब वह लड़की उससे मिलने न रात में आए, न दिन में और अपने साथ कोई वस्तु लाए जो उपहार हो भी, नहीं भी हो। निर्धन समझ गया कि कोतवाल सही न्याय नहीं करना चाहता है, किन्तु उसकी लड़की ने जो कि बहुत चतुर थी, हार नहीं मानी। वह लड़की ब्रह्म मुहूर्त में चिड़ियों से भरा एक डिब्बा लेकर कोतवाल से मिलने गई। उस समय न दिन था न रात। डिब्बा खोलते ही सब चिड़ियां उड़ गईं। इस तरह वह उपहार था भी और नहीं भी था। लड़की की अक्लमंदी से कोतवाल बहुत खुश हुआ। उसने लड़की के सामने शादी का प्रस्ताव रखा और दोनों की शादी हो गयी। कोतवाल ने अपनी पत्नी से वादा लिया कि वह उसके न्याय में कभी दखल नहीं देगी।

लड़की का स्वभाव मधुर होने के कारण वह आस-पड़ोस में बहुत लोकप्रिय हो गई। इसी तरह कई वर्ष बीत गए। एक दिन कोतवाल के पास दो किसान न्याय के लिए पहुंचे। उनमें से एक के पास एक घोड़ा था और दूसरे के पास एक घोड़ी थी जिन्होंने एक नन्हे बच्चे को जन्म दिया था। दोनों किसान घोड़े के नन्हे बच्चे पर अपना अधिकार जता रहे थे। घोड़े वाला किसान धनी था इसलिए कोतवाल ने उसके पक्ष में फैसला दिया। घोड़ी वाला गरीब किसान रोता हुआ कोतवाल के घर पहुंचा और उसकी पत्नी को सारी बात बतायी।

सब सुनकर उसने गरीब को एक उपाय बताया। अगले दिन कोतवाल एक पहाड़ी का दौरा करने

गया। वहां उसने देखा कि वही गरीब किसान मछली पकड़ने बैठा है। कोतवाल बोला, "अरे मूर्ख, पहाड़ पर मछली कहां से आएगी?" गरीब बोला, "हुजूर यदि घोड़ा बच्चा दे सकता है तो पहाड़ पर मछली भी फंस सकती है।" कोतवाल बहुत लज्जित हुआ और बोला, "यदि तुम बता दो कि यह सलाह तुम्हें किसने दी तो मैं तुम्हें घोड़े का बच्चा दिला सकता हूं।" लोभ में आकर किसान ने कोतवाल की पत्नी का नाम ले दिया। कोतवाल घर जाकर पत्नी पर बहुत नाराज हुआ कि उसने अपना वादा क्यों तोड़ा। वह बोली कि अन्याय उससे सहन नहीं होता। तब उसके पति ने उसे सजा के तौर पर घर से निकल जाने को कहा और बोला, "तुमने मेरी बहुत प्रेमपूर्वक सेवा की है। अपनी पसंद की कोई सबसे प्रिय चीज तुम अपने साथ ले जा सकती हो।" पत्नी कुछ सोचकर बोली, "क्यों न हम आज रात का खाना आखिरी बार साथ-साथ खायें।" कोतवाल ने बात मान ली। पत्नी ने उस दिन बहुत स्वादिष्ट भोजन बनाया और खाने के समय अपने पति को धीरे-धीरे खूब शराब पिला दी। जब वह बेहोश हो गया तो वह अपने नौकरों की मदद से कोतवाल को उठाकर अपने पिता के घर ले गयी।

अगले दिन जब कोतवाल सोकर उठा तो उसने स्वयं को निर्धन किसान की झोंपड़ी में पाया। पत्नी बोली, "आपके आदेश के अनुसार मैं आपके घर से अपनी सबसे प्रिय वस्तु अर्थात् आपको ही लेकर अपने पिता के घर चली आई हूं।" कोतवाल अपनी अपनी पत्नी की बुद्धि और अपने प्रति अगाढ़ प्रेम देखकर रीझ गया और उसे सम्मानपूर्वक अपने घर वापस ले गया।

उस दिन से कोतवाल साहिब फैसले सुनाने से पहले चुपके से अपनी पत्नी की सलाह भी लेते थे। ☐

साभार (चेक देश की लोककथाएं)

कब तक बांधे रखोगे हमको
फर्ज़-प्यार की तक़रीर से
कभी न कभी जाएंगे उस पार
तुम्हारी बनाई दहलीज़ से।

आखिर क्यों ?

पिताजी जब रघु, नूतन, मोहन सभी फेल हो गये तो क्या मैं उस समाज से बाहर हूँ।
नालायक औलाद, इसका मतलब तू भी फेल हो गया। तेरे लिए क्या-क्या सपने सँजोये थे मैंने।
होने दो जी फेल ही तो हुआ है। ठोकर लग गई अब सुधर जायेगा। भला इसकी क्या गलती है? इस साल पर्चे ही कठिन आये थे।
ठीक है। कान खोलकर सुन लो। इस साल मेहनत कर और पास होकर दिखाना।
पिताजी मुझे भी शहर पढ़ने भेजिये ना। मैं भी हमेशा पास होकर दिखाऊँगी।
चुप हो जा। तुझे तो अब घर से बाहर पैर नहीं रखने दूँगी। बड़ी आई शहर जाने वाली। तेरे कारण ही मेरा लाडला फेल हुआ है।
तुम भी सुन लो जी, इसके और मेरे बीच में तुम मत बोलना।
भागवान, हमें कहाँ फुरसत है। उसे मारो चाहे डाँटो, मैं तो कह रहा था कि इसके हाथ पीले कर दें।
कान खोलकर सुन लो पिताजी, मैं शादी नहीं करूँगी। अगर करना ही है तो भैया की करो, फेल तो भैया ही हुआ है ना। अगर मुझसे घर का काम करवाना है तो भैया से भी करवाइये, हमें समान अधिकार जो हैं। मेरे साथ ही ये भेद-भाव क्यों। मेरा तिरस्कार क्यों? क्या इसलिए कि मैं एक लड़की हूँ? अपनी अंतरात्मा से पूछिए पिताजी मेरे साथ ये भेदभाव क्यों? क्या ये सब जो आप कर रहे हैं उचित है? समाज की रूढ़ियों में बँधे हुए आप मुझे जीवन भर के लिए, अपमान, उपेक्षा, तिरस्कार के घने जंगल में क्यों छोड़ रहे हैं .... आखिर क्यों?
आखिर क्यों, ऐसा क्यों? ....चुप हो जा लक्ष्मी, वाकई समाज रूढ़ियों के बँधन में बँधा है। मैं तेरे जीवन को अंधकार के घने गड्ढे में धकेल रहा था। मैं तुझे पढ़ाऊँगा; तेरी जो इच्छा है उसे जरूर पूरा करूँगा।
चुप हो जा बेटी।

अपने
आप से जुड़ कर
तुम सबसे जुड़ूँगी।
उतार फेकूँगी पुराना चोला,
पुरानी पहचान।

पितृसत्ता की इस
महासमर भूमि– मेरे शरीर को नये
अर्थ नये आयाम दूंगी।

नये अंगों, नई कोख
नये मानस के साथ
उठ खड़ी होऊँगी
मैं एक सम्पूर्ण औरत।

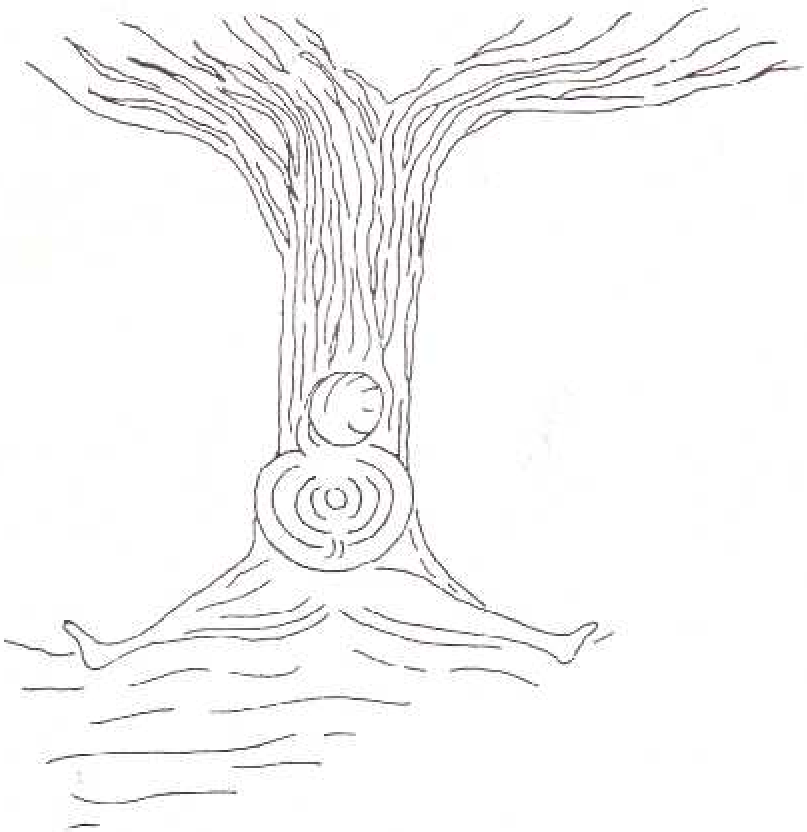

मैं थी
मेरा आंगन था
जागती थी बड़े अंधेरे
बुहारती थी, लीपती थी
सजाती थी, संवारती थी–
अकेले ही अपने आंगन को
एक दिन जागी चाहत
झांकने की आंगन से बाहर
तो सट गया आंगन
पड़ोसिन बहना का